Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2 | अंक 35

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

31 अगस्त 2017 ई. 8 ज़िलहिज्जा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी है जो बहुत सफाई से पूरी हो गई है

ऐसे दिलों पर ख़ुदा की लानत के ऐसे स्पष्ट निशानों पर आरोप लगाने से नहीं रुकते।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

23- तीईसवां नशान - डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी है जो बहुत सफाई से पूरी हो गई है और यह वास्तव में दो पेशगोइयां थीं। प्रथम यह है कि वह पंद्रह महीने के अंदर मर जाएगा दूसरी यह कि अगर वह अपनी बात से रुक जाएगा जो उसने प्रकाशित कि नऊज़ो बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दज्जाल थे तो पन्द्रह * महीने के अंदर नहीं मरेगा और जैसा कि मैं लिख चुका हूँ मौत की भवष्यिवाणी इस आधार पर थी कि आथम ने अपनी एक किताब अनदरूना बाइबल नामक में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था और यह सच है कि भविष्यवाणी में आथम के मरने के लिए पंद्रह महीने की अवधि थी लेकिन साथ ही यह शर्त थी जिसके ये शब्द थे कि "बशर्ते सच्चाई की तरफ न लौटे।" लेकिन आथम उसी सभा में लौट गया और निहायत विनम्रता से ज़बान निकाल कर और दोनों हाथ कान पर रखकर दज्जाल कहने से लज्जा प्रकट की। इस बात के गवाह न एक न दो बल्कि साठ या सत्तर आदमी हैं जिनमें से आधे के करीब ईसाई हैं और आधे के करीब मुसलमान और मैं विचार करता हूं कि पचास के लगभग अभी तक उनमें से जीवित होंगे जिनके सामने आथम ने दज्जाल कहने से रुक गया और मरते समय तक एक शब्द मुंह से निकाला। अब सोचना चाहिए कि कैसी बुरी बात और बदमाशी और बेईमानी है कि बावजूद इसके खुले खुले रुक जाने के जो आथम ने साठ या सत्तर आदमियों के सम्मुख किया फिर कहा जाए कि वह नहीं रुका क्या सारा आधार अल्लाह के ग़ज़ब का तो दज्जाल के शब्द पर था और इसी वजह यह एक भविष्यवाणी थी, और इस शब्द से रुक जाना एक शर्त थी। मुसलमान होने का भविष्यवाणी में कोई ज़िक्र नहीं अत: जब वह बहुत विनम्रता से रुक गया तो ख़ुदा ने भी दया के साथ लौटा। अल्लाह के इल्हाम का यह उद्देश्य नहीं था कि जब तक आथम इस्लाम न लाए मौत से न बचेगा क्योंकि इस्लाम के इनकार में तो सारे ईसाई भागीदार हैं ख़ुदा इस्लाम के लिए किसी पर अत्याचार नहीं करता और ऐसी भविष्यवाणी बिल्कुल अक्ल से परे है कि अमुक व्यक्ति अगर इस्लाम न लाए तो अमुक समय तक मृत्यु को पाएगा, दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है। और जैसा कि मैं बार बार लिख चुका हूँ बस इस्लाम के इनकार से कोई पीड़ा किसी पर दुनिया में नहीं आ सकती बल्कि इस गुनाह के बारे में पूछताछ केवल क़यामत के दिन होगी। फिर आथम की इसमें कौन विशेषता थी कि इस्लाम के इनकार के कारण से उसकी मौत की भविष्यवाणी की गई और दूसरों के लिए नहीं की गई बल्कि भविष्यवाणी का केवल यह कारण था कि उसने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में दज्जाल का शब्द उपयोग किया था। जिस कथन से इस ने साठ या सत्तर मनुष्य के सामने अपनी बात से रुक गया जिन में से कई शरीफ और सम्मानित थे जो इस सभा में मौजूद थे। फिर जबकि वह इस शब्द रुक गया बल्कि इस के बाद रोता रहा तो ख़ुदा तआला की जनाब में रहम के योग्य हो गया। लेकिन केवल इतना ही कि उसकी मौत में कुछ महीने देरी हो गई और मेरे जीवन में ही मर गया और वह बहस जो एक मुबाहिला का रंग में थी उसकी दृष्टि से वह अपनी मौत के कारण से झूठा साबित हुआ तो क्या अब तक वह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई, वास्तव में, यह पूरी हो चुकी है और पूरी तरह सफाई से पूरी हो गई है। ऐसे दिलों पर ख़ुदा का अभिशाप है कि ऐसे अचूक निशानों पर आपत्ति करने से रुकते नहीं आते अगर वे चाहें तो आथम के रुक जाने पर में चालीस आदमी के लगभग गवाह पेश कर सकता हूँ और इसलिए उसने कसम भी न खाई हालांकि सभी ईसाई कसम खाते और हज़रत मसीह ने स्वयं कसम खाई है और हमें बहस को विस्तृत करने की आवश्यकता नहीं है। आथम अब जीवित मौजूद नहीं है ग्यारह वर्ष से अधिक हो चुका है कि वह मर चुका है।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 221 से 223)

* इस बात की हज़ारों लोगों को ख़बर होगी कि जब आथम को शर्त के अनुसार इल्हाम की देरी दी गई तो उसने इस देरी का कोई धन्यवाद न किया बल्कि यह समझ कर कि कोई बला सिर से टल गई सच्चाई को छुपाना धारण किया और कहा कि मैं नहीं डरा और कसम खाने से इंकार किया। हालांकि ईसाई धर्म के सारे बुज़ुर्ग कसम खाते आए हैं और इंजील से साबित होता है कि हज़रत मसीह ने ख़ुद कसम खाई। पौलौस ने कसम खाई पितरस ने कसम खाई अत: उसका इस सच्चाई को छुपाने के बाद ख़ुदा ने मेरे पर प्रदर्शित किया कि वह अब जल्द मर जाएगा, तब मैंने इस विषय में एक विज्ञापन प्रकाशित किया। अत: अजीब बात है कि इस इश्तिहार की तारीख से जो मैंने इस दूसरे इल्हाम की दृष्टि से उसकी मौत के विषय में प्रकाशित किया था वह पंद्रह महीने के अंदर मर गया। अत: ख़ुदा ने आथम को जबकि उसने सच्चाई की राह छोड़ दी और सच्चाई को छुपाया वही पंद्रह महीने कायम रखे जिसके विषय में हमारे विरोधियों के घरों में मातम और शोर है। इसी में से। ☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -7)

☆ वाक्फे ज़िन्दगी चौबीस घंटे, सप्ताह के सातों दिन और साल के 365 दिन वक्फ है।

☆ वक्फ ज़िन्दगी का उद्देश्य ही यह है कि आप चौबीस घंटे समर्पित हैं, सप्ताह के सातों दिन और साल के 365 दिन समर्पित कर रहे हैं। ☆ कई बार माल का भी नुकसान होता है, मिशन हाउस या अन्य लागत हैं उन पर भी हर मुरब्बी को ध्यान रखना चाहिए कि कम से कम खर्च करे और देखे कि जमाअत पर अधिक वित्तीय बोझ न पड़े, आप ने यह देखना है कि आप ने किस हद तक जमाअत को मालों को बचाना है और दूसरों को भी नसीहत करनी है, जब तक ख़ुद खर्च को नियन्त्रित नहीं करेंगे दूसरों को नसीहत नहीं कर सकते। ☆ हर मुरब्बी का काम है कि अन्य मुरब्बी का सम्मान और आदर करे, मुझे रिपोर्ट मिली है कि कई बार आप लोग दफ्तरों में बैठे दूसरों के विषय में हंसी ठट्ठा और उपहास बहुत ज्यादा कर रहे होते हैं जिसकी वजह से वहाँ बैठे दूसरे क्रमिकों पर बहुत ग़लत प्रभाव पैदा होता है। ☆ युवा मुरब्बियों को मैं विशेष रूप से कहना चाहता हूं कि आप लोगों ने डरना नहीं और आप ने बिना डरे सारे मुद्दे हिकमत से, कुरआन की शिक्षा के अनुसार, इस्लामी शिक्षा के अनुसार करने हैं। ☆ जहां देखें झगड़ा है वहाँ कह दें, क्योंकि तुम्हारा झगड़ा करने का इरादा है इसलिए हम तुम्हारे इन मामलों का जवाब नहीं देते। जमाअतों को कभी मौका न दें कि जमाअतें या उहदेदार आप पर उंगली उठाएं, जो मैंने पहले कह दिया है, फिर, फिर, फिर कह रहा हूँ कि अपना सुधार पहले करें, अपना दामन साफ होगा तो आपके ऊपर कोई भी उंगली उठाएगा तो फिर ही उस की पकड़ हो सकती है।

मुबल्लिग़ों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की मुलाक़ात और महत्त्वपूर्ण नसीहतें हमें विश्व शान्ति के लिए कोशिश भी करनी चाहिए और दुआ भी

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

16 अप्रैल 2017 (रविवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे पधार कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक और रिपोर्ट देखीं और हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ्तर की मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों से मुलाक़ात शुरू हुई। आज कार्यक्रम के अनुसार 46 परिवारों के 174 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। यह मुलाकात करने वाले परिवार जर्मनी के विभिन्न 40 जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। कुछ दोस्त और परिवार बड़ा लंबे सफर तय करके अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात के सौभाग्य के लिए पहुचें थे। इन सभी ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम एक बजकर 35 मिनट तक जारी रहा।

बाद में आदरणीय आबिद वहीद ख़ान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ से दफ्तर मुलाकात का सौभाग्य हासिल किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दो बजे तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ोहर और असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों में व्यस्त रहे।

फैमली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार सवा छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों से मुलाक़ात शुरू हुई। आज शाम इस सत्र में 38 परिवारों के 151 लोगों ने अपने आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाले यह परिवार जर्मनी की निम्नलिखित जमाअतों आए थे।

Dietzenbach, Freiburg, वेज़बादन, Roedelheim, Paderborn, Heilbronn, Boeblingen, ड्रामसटड, रसेलहेम वेस्ट, Friedrichsdorf, Wuerzburg, Pfungstadt, Neuwied, Homburg / saar, मोरफीलडन, Stein Bach, Limesheim, Herborn, Ruedesheim, Soest, Usingen, Ginnheim, Florsheim, हायडल बर्ग, ग्रास गौराओ, Kranichstein West की जमाअतों से आई थीं। कुछ उनमें से बड़े लंबे सफर तय करके आई थीं। इसके अतिरिक्त दुबई जमाअत से आने वाले कुछ दोस्तों ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया। आज मुलाक़ात करने वाली ये सभी वे परिवार थे जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रहीं थीं। आज का दिन उनके जीवन में उनके लिए और उनकी संतानों के लिए एक यादगार दिन था। ये लोग अपने प्यारे हुज़ूर से पहली बार मिले थे और आज यह कुछ क्षणों उनकी सारे जीवन की पूंजी थे। इन सभी ने अपने आक़ा के साथ इन मुबारक क्षणों को तस्वीरों में कैद किया जो उनके घरों की शोभा बनेंगी और उनकी आने आने वाली संतानों के लिए भी एक बहुमूल्य ख़ज़ाना होंगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों चॉकलेट अ्रिफ्रति। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम आठ बजे तक जारी रहा।

आमीन का समारोह

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से निम्नलिखित 30 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय शायान अहमद बाजवा, इमरान आरिफ, अल्बसर बादल भट्टी, रिजवान अहमद मलिक, सफवान अहमद राणा, बासित लुकमान काहलों, अब्दुल काफी महमूद, साक़िब महमूद, सैयद अताउल बाक़ी।

प्रिया नौरीन अहमद, नाईमा रज़ा, सारा शहज़ाद, आतफा रफीक, इफशा नूर काज़ी, जाइशा अहमद, अतयतुल अव्वल बट्ट, अमवाज़ वरूद साही, ईशा कंवल अहमद, रुमीहा समरह राजा, मदीहा अहमद, ज़ुहा ज़ीशान, बासमह अफज़ल, मरियम आबिद, अज़की ख़ुलअत, सबीकह हमीद , यास्मीन सईद, सैयद ईमान, आसफ़्तुन्नूर नवाज़, अमतुल बारी नवाज़, फरीहा मुबारक राणा।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। अब नमाज़ मग़रिब और इशा अदा करने में 10 मिनट का समय बाकी था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ इस दौरान पधारे रहे फ़रमा और अपने सामने बैठे बच्चों की अपने पास बुला लिया और अनुकंपा कर के उन बच्चों से बातचीत की। उनसे उनकी कक्षाओं और शिक्षा के विषय में पूछा, इन सभी बच्चों ने अपने प्यारे हुज़ूर से शरफ़ हाथ मिलाया और मुबारक हाथ का चुंबन

शेष पृष्ठ 6 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की कृपा से आज ब्रिटेन का जलसा सालाना शुरू हो रहा है दुआओं में इन दिनों में बहुत ज़ोंर दें और जिन्हें तौफ़ीक़ है वह सदके भी दें कि अल्लाह तआला इस जलसा को हर लिहाज़ से सफल और बरकत वाला करे और सब लोग, यहां आकर शामिल होने वाले भी और दुनिया में विभिन्न देशों में रहने वाले अहमदी भी जो एम. टी. ए के माध्यम से जलसा की कार्यवाही सुन रहे हैं, जलसा के प्रत्येक मामले में सफलता और दुश्मन की हर बुराई से बचने के लिए दुआ करें।

पिछले ख़ुत्बा में मैंने मेहमान नवाज़ी करने वाले सेवकों को जलसा के मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करने की तरफ ध्यान दिलाया था। आज संक्षेप में मेहमानों को ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मेहमान के भी कुछ कर्तव्य और ज़िम्मेदारियां हैं जिसे उसने अदा करना है।

मेहमान का निःसन्देह इस्लाम में बहुत अधिकार है लेकिन इस्लाम एक ऐसा नरम और मध्यम शिक्षा देने वाला धर्म है जो केवल एक पक्ष को ही ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाकर उस तरफ ध्यान देने की नसीहत नहीं करता बल्कि दूसरे पक्ष को भी कहता है कि तुम भी अपने कर्तव्यों को अदा करो और जिन अधिकारों का अदा करना तुम पर वाजिब है तुम उन्हें अदा करों क्योंकि यही बात है जो प्यार, प्रेम और भाईचारा पर आधारित एक समाज के स्थापना की नींव रखेगी।

जलसा में आने का उद्देश्य तो तक्वा में उन्नति करना, ख़ुदा तआला से अपने संबंध में बढ़ना और एक दूसरे के अधिकार देना और एक दूसरे के लिए अपनी कुर्बानी की भावना और गुणवत्ता को बढ़ाना है।

जलसा में शामिल होने वाले मेहमान जब जलसा में शामिल होने के लिए आते हैं तो बस वह मेहमान नहीं होते कि बतौर मेहमान अपने से अच्छा व्यवहार और आराम की उम्मीद रखें बल्कि वह त्याग और बलिदान की उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने वाले होने चाहिए और जलसा आयोजित करने का जो लक्ष्य है वह हर समय उनके सामने होना चाहिए जो जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला से संबंध और आध्यात्मिकता में विकास है और एक दूसरे का अधिकार देना है।

जहां तक ग़ैर जमाअत मेहमानों का संबंध है तो निश्चित रूप से हम ने उनका ख्याल रखना है और उनके आतिथ्य में अपने संसाधनों के अनुसार जिस सीमा तक आराम उपलब्ध हो सकता है और आतिथ्य का हक़ अदा हो सकता है देना है।

एक अहमदी जलसा में शामिल होने के लिए आता है, तो उसे अपने आप को मेहमान और मेज़बान दोनों समझना चाहिए। तभी कुर्बानी और बलिदान की भावना में वृद्धि होगी और जलसा का माहौल एक शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण परिवेश बन जाएगा।

जलसा सालाना पर पधारने वाले मेहमानों को हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रौशनी में अत्यधिक प्रमुख उपदेश। जलसा के अवसर पर बाज़ार तथा प्रदर्शनियों के बारे में वर्णन और मेहमानों और मेज़बानों को विभिन्न कामों के बारे में विशेष रूप से ध्यान देने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जुलाई 2017 ई. स्थान -हदीकतुल महदी आलटन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला की कृपा से आज ब्रिटेन का जलसा सालाना शुरू हो रहा है दुआओं में इन दिनों में बहुत ज़ोंर दें और जिन्हें तौफ़ीक़ है वह सदके भी दें कि अल्लाह तआला इस जलसा को हर लिहाज़ से सफल और बरकत वाला करे और सब लोग, यहां आकर शामिल होने वाले भी और दुनिया में विभिन्न देशों में रहने वाले अहमदी भी जो एम. टी. ए के माध्यम से जलसा की कार्यवाही सुन रहे हैं, जलसा के प्रत्येक मामले में सफलता और दुश्मन की हर बुराई से बचने के लिए दुआ करें।

पिछले ख़ुत्बा में मैंने मेहमान नवाज़ी करने वाले सेवकों को जलसा के मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करने की तरफ ध्यान दिलाया था। आज संक्षेप में मेहमानों को ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मेहमान के भी कुछ कर्तव्य और ज़िम्मेदारियां हैं जिसे उसने अदा करना है।

मेहमान का निःसन्देह इस्लाम में बहुत अधिकार है लेकिन इस्लाम एक ऐसा नरम और मध्यम शिक्षा देने वाला धर्म है जो केवल एक पक्ष को ही ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाकर उस तरफ ध्यान देने की नसीहत नहीं करता बल्कि दूसरे पक्ष को भी कहता है कि तुम भी अपने कर्तव्यों को अदा करो और जिन अधिकारों का अदा करना तुम पर वाजिब है तुम उन्हें अदा करों क्योंकि यही बात है जो प्यार, प्रेम और भाईचारा पर आधारित एक समाज के स्थापना की नींव रखेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब एक साल नाराज़गी व्यक्त फरमाते हुए जलसा का आयोजन नहीं फरमाया था तो उस समय इस का कारण भी जलसा में शामिल होने वालों के ग़लत व्यवहार थे। अर्थात आने वाले मेहमान अपने कर्तव्यों और हक़ अदा न करने की वजह से आप अलैहिस्सलाम के सदमे और नाराज़गी का कारण बने थे। आपने नाराज़गी की अभिव्यक्ति

इसलिए नहीं की कि जलसा सालाना में सीधे शामिल होने वाले किसी व्यक्ति से आपको कोई सीधा कष्ट पहुंचा था। बल्कि आप ने यह अभिव्यक्ति की कि तुम लोग जो जलसा में शामिल हुए हो एक दूसरे के अधिकार अदा नहीं कर रहे हो और न केवल यह कि एक दूसरे के हक़ अदा नहीं कर रहे बल्कि स्वार्थ और ख़ुदपसंदी भी व्यक्त कर रहे हो। अपने आराम को दूसरों के आराम पर प्राथमिकता दे रहे हो। जलसा में आकर इस प्रकार अभिव्यक्ति कर रहे हो कि यह कोई सांसारिक मेला है जबकि जलसा में आने का उद्देश्य तो तक्वा में उन्नति करना, ख़ुदा तआला से अपने संबंध में बढ़ना और एक दूसरे के अधिकार देना और एक दूसरे के लिए अपनी कुर्बानी की भावना और गुणवत्ता को बढ़ाना है और जब आप ने देखा कि इस गुणवत्ता पर कुछ लोग पूरा नहीं उतर रहे, तो आप को एक बड़ा सदमा पहुंचा है, जिस की अभिव्यक्ति आप ने स्पष्ट रूप से की।

(उद्धरित शहादतुल कुरआन, रूहानी ख़ाज़ायन, जिल्द 6, पृष्ठ 394 से 395)

अत: जलसा में शामिल होने वाले मेहमान जब जलसा में शामिल होने के लिए आते हैं तो बस वह मेहमान नहीं होते कि बतौर मेहमान अपने से अच्छा व्यवहार और आराम की उम्मीद रखें बल्कि वह त्याग और बलिदान की उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने वाले होने चाहिए और जलसा आयोजित करने का जो लक्ष्य है वह हर समय उनके सामने होना चाहिए जो जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला से संबंध और आध्यात्मिकता में विकास है और एक दूसरे का अधिकार देना है।

जहां तक ग़ैर जमाअत मेहमानों का संबंध है तो निश्चित रूप से हम ने उनका ख्याल रखना है और उनके आतिथ्य में अपने संसाधनों के अनुसार जिस सीमा तक आराम उपलब्ध हो सकता है और आतिथ्य का हक़ अदा हो सकता है देना है और विशेष रूप से कुछ देशों के सरदार जो हैं वे भी मेहमान बन कर आए हैं। उन का तक मेहमान बन के आने का संबंध है उनका आतिथ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद भी है कि राष्ट्रों के नेता और सरदार जो तुम्हारे पास आएं तो उन्हें सम्मान दो, उनका सम्मान करो और उनके लिए खाने पीने का प्रबन्ध करो।

(सुनन इब्ने माजा, किताबुल, हदीस 3712)

इसी तरह बहुत से लोग सत्य की तलाश में हैं, बहुत से लोग आते हैं। वे कोई भी लोग हों उनका आतिथ्य हमें पूरी तरह करना चाहिए। हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यही बात समझाई है। अत: आप अपने लंगर के सेवकों को यही हिदायत दिया करते था कि तुम किसी को जानते हो या नहीं। कोई बड़ा हो या छोटा, समृद्ध या ग़रीब है, तुम ने प्रत्येक की मेहमान नवाज़ी करनी है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 6, पृष्ठ 226)

लेकिन जब एक अहमदी जलसा में शामिल होने के लिए आता है, तो उसे अपने आप को मेहमान और मेज़बान दोनों समझना चाहिए। तभी कुर्बानी और बलिदान की भावना में वृद्धि होगी और जलसा का माहौल एक शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण परिवेश बन जाएगा।

मेहमान को हमेशा यह प्रयास करना चाहिए कि उस ने घर वाले के लिए तंगी के काम करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि सुविधा के सामान करने हैं। यी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उपदेश है।

(सहीह अलबुख़ारी, किताबुल अदब, हदीस 6135)

जलसा के दिनों में यहाँ इस जगह पर क्योंकि अस्थायी प्रबंध होता है इसलिए यहां आवास रखने वालों को वह आराम और सुविधा प्रदान नहीं की जा सकती जो एक स्थायी व्यवस्था में की जा सकती है। वहाँ भी सामूहिक निवास भी बनाए गए हैं और ख़ेमों में परिवारों के की भी व्यवस्था की गई है इस प्रबंध में बहुत सारी कमियां रह गई होंगी। जलसा में आने वाले मेहमानों के लिए जमाअत के मेहमान नवाज़ी के विभाग घरवाले की हैसियत रखते हैं इसलिए बजाय इन विभागों को इस नज़र से देखने कि यह जमाअत के विभाग हमारी सेवा पर तैनात किए गए हैं और अगर इनमें कहीं कोई कमी या कमज़ोरी है, तो हम हक रखते हैं कि उन्हें जो चाहे कहें और आराम प्राप्त करने की कोशशि करें तो यह ग़लत सोच है। ये काम करने वाले पुरुष और स्त्रियां जो सेवा कर रहें हैं ये कोई हमारे कर्मचारी नहीं हैं। यह उनकी विनम्रता और सेवा की भावना है जो वे अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए प्रस्तुत करके दिखा रहे हैं। इन सेवा करने वालों में कुछ पढ़े लिखे और धन दौलत वाले लोग हैं इसलिए मेहमानों को चाहिए कि कार्यकर्ताओं के साथ ज़रूरत के समय नरमी और प्यार से बात कर के अपनी ज़रूरत को मांगें और अगर वे यानी कार्यकर्ता मजबूरी के कारण से माफी चाहें तो फिर ख़ुश दिली से उनकी माफी स्वीकार करें। इसी तरह, हमारे युवा लड़के लड़कियां भी बड़ी भावना से ड्यूटी देते हैं और दे रहें हैं। कभी-कभी कुछ बड़ों के ग़लत व्यवहार और बात करने के तरीके से इन नौजवानों को बड़ी ठोकर लगती है आर ये बड़े लोग इन की ठोकर का करण बन जाते हैं। इसलिए इस दृष्टि से भी प्रत्येक को ध्यान रखना चाहिए। बुज़ुर्गों को भी छोटों से स्नेह से व्यवहार करना चाहिए।

हर अहमदी आने वाला मेहमान अपने आप को केवल मेहमान न समझे, जैसा कि मैंने कहा, बल्कि इस इरादे से जलसा में शामिल हो कि मेरा मूल उद्देश्य जलसा में शामिल होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनना है, जलसा की बरकतों से लाभ उठाना है और अपनी रूहानियत में तरक्की करनी है, न कि छोटी छोटी सांसारिक सुविधाओं और बातों के पीछे अपना समय बर्बाद करना है और माहौल को इसलिए मुकदर और ख़राब करना है। लेकिन कार्यकर्ताओं को भी यहाँ फिर मैं दोबारा यही कहूंगा कि जो भी स्थिति हो, जैसा भी किसी का व्यवहार हो, आप लोगों ने नैतिकता और धैर्य और साहस का प्रदर्शन करना है।

मेहमानों को खाने खिलाने के लिए जो भी उपलब्ध हो इन दिनों में इसे हंसी ख़ुशी से खा लेना चाहिए, देखें यह कितनी बड़ी भावना है कि कुछ लोग जो कुछ विभागों में अधिकारी हैं सिर्फ इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों की सेवा में बरकतें हैं, आवकाश लेकर एक शौक और जोश से खाना पकाने की सेवा भी करते हैं। इसलिए, यदि खाने के मज़ा में आगर कमी रह जाए तो शिकायत की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन जो खाना खिलाने वाले कार्यकर्ता हैं और जो भोजन वितरण करने वाले हैं वे भी याद रखें कि जब किसी को खाना दें तो सम्मान से दें और अगर कोई दस बार भी सालन मांगे और अपनी मर्ज़ी का सालन डलवाना डलवाना चाहे तो डाल दें। कभी-कभी खाना खिलाने के स्थानों पर छोटी छोटी चीज़ों पर कड़वाहट पैदा हो जाती है इस से बचने का प्रयास करना चाहिए।

इसी तरह मेहमान यह भी ध्यान रखें कि खाना खाकर जितनी जल्दी हो सके खाने की मार्की छोड़ दें ताकि दूसरे लोग भी आराम से आकर खाना खा सकें। कोशिश तो प्रशासन की यही होती है कि एक समय में अधिक से अधिक लोगों को खाना खिलाया जा सके और जगह भी व्यापक करके, बनाने की कोशिश की जाती है, लेकिन फिर भी भीड़ में कठिनाई आ जाती है। यदि मेहमानों का समर्थन हो तो फिर इस में भी सुविधा रहती है। मेहमानों के लिए दूसरी सुविधाएं बाथरूम आदि भी बेहतर प्रबंध करने की कोशिश की जाती है, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि अस्थायी व्यवस्था की वजह से कई बार मेहमानों को मुश्किल और परेशानी का भी सामना करना पड़ता है। इसे बर्दाश्त किया जाना चाहिए अब रात को ही मुझे रिपोर्ट मिली कि बाथरूम के एक भाग के निकास पाइप (Drain Pipe) टूट गया है जिसकी वजह से सीवर अवरुद्ध हो गए, बाथरूम को थोड़े समय के लिए बंद करना पड़ा और कठिनाई आई। यद्यपि प्रशासन इसे हल करने और उसे ठीक करने का प्रयास कर रही है, लेकिन मेहमानों को इस में और अधिक कठिन आ सकती हैं। इसके अलावा जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बा में भी कहा था कि परिवहन और पार्किंग के प्रबंध में इस बार सुविधा के लिए कुछ परिवर्तन किया गया है और अभी तक जो मेरी रिपोर्ट है उसके अनुसार तो इस सुविधा का लाभ हो रहा है और आवागमन या ट्रैफिक जो जाम हो जाता था इस से काफी हद तक कम हो गया, बल्कि ट्रैफिक का उत्तम प्रवाह है। लेकिन फिर भी आने वालों को पार्किंग और परिवहन विभाग से तीनों दिनों में भी पूरा सहयोग करना चाहिए। जहां और जिस तरह भी कारों और लोगों को भा que और लाइनें लगानें को कहा जाए उसी तरह लगाएं जैसा

कि मैंने कहा, कारों की पार्किंग के लिए बड़ी पार्किंग और जगह भी ली गई है, वहां से बसें पर लाया जाएगा। इस में फिर पूर्ण सहयोग करें। यदि सहयोग होगा तो बिना किसी ट्रैफ़िक की रुकावट के आसानी से समय पर पहुंच सकते हैं। आमतौर हर साल जुम्अ: के समय लोग देरी से पहुंचते थे और अंत समय तक आ रहे होते थे बल्कि मुझे कहा जाता था कि कुछ लेट आए ताकि लोग पहुँच जांए। लेकिन इस बार ऐसा लगता है कि इस कारण से कुछ बेहतर प्रबंध है इसलिए आगे भी सहयोग करेंगे तो बेहतर प्रबंध जारी रहेगा अन्यथा परेशानी होगी।

इसी तरह जैसा कि पहले भी मैंने कहा था कि समय से पहले यात्रा शुरू करें ताकि समय पर पार्किंग की जगह पहुँच सकें और फिर बसों के द्वारा जलसा गाह पर लाने का प्रबंध किया जा सके।

इसी तरह सुरक्षा की समस्या हर साल बढ़ रही है इसलिए सुरक्षा जांच में भी सहयोग करें। अपना (Aims Card)और जहां यह नहीं है या पहचान पत्र की आवश्यकता है या पहचान पत्र की ज़रूरत है उस को दिखाने की ज़रूरत है वह ज़रूर दिखाए। जितनी बार दिखाने का कहा जाए दिखाऐं। अपना कार्ड और विशेष क्षेत्र का पास किसी अन्य को न दें। कई बार लोग ग्रीन क्षेत्र का कार्ड दूसरों को दे देते हैं या किसी भी जगह जाने की अगर access है किसी दूसरे को न दें। पिछले सालों में ऐसी घटनाएं हुई हैं कि अपने ग्रीन क्षेत्र के या किसी विशेष क्षेत्र के कार्ड अपने किसी परिचित या दोस्त को दे दिए और ये ग़लत हरकत कई बार कार्यकर्ताओं और अच्छे भले अधिकारी भी कर जाते हैं इसलिए सावधानी करनी चाहिए। चेकिंग करने वाले भी अगर किसी को एमज़ (AIMS) के अलावा दो कार्ड जारी हुए हैं तो दोनों जाँच किया करें और देखें कि एक ही नाम के ये दोनों होने चाहिए।

इसी तरह, इस वर्ष, शायद सुरक्षा जांचकर्ता यह जांच भी कर सकते हैं और उन लोगों को रोक जो अपने साथ पानी की बोतलें लाते हैं। इस जाँच में भी मदद करें क्योंकि सरकारी विभागों द्वारा हमें इस ओर ध्यान दिलाया गया है और यह सभी सुरक्षा उपायों के लिए है इसलिए सब को सहयोग करना चाहिए।

सुरक्षा जाँच करने वाले कार्यकर्ताओं का भी काम है कि चाहे कोई जानने वाला है, या नहीं जानने वाला है कार्यकर्ता है, या ग़ैर कार्यकर्ता है, अधिकारी है या अनौपचारिक प्रत्येक को चैक करें। इसलिए इस बारें में किसी को बुरा मनाने की आवश्यकता नहीं और चैकिंग करने वालों को शर्माने के आवश्यकता है।

इसी प्रकार यह भी ज़रूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दाएं बाएं अपने माहौल पर नज़र रखे। यह बहुत महत्वपूर्ण है और सब से बढ़ कर, जैसा कि मैंने पहले कहा था, इन दिनों पर दुआओं पर ज़ोर दें। अल्लाह तआला प्रत्येक दृष्टि से जलसा को बरकत वाला फरमाए। जलासा की कार्यवाही सुनें और इधर उधर मत फिरें।

प्रशासन और सेवा करने वालों को एक बात ओर कहना चाहता हूं और पहले से ही कई बार कहा है कि प्रशासन को लोगों की सुविधा के लिए सबसे अधिक प्रयास करना चाहिए। कई बार कुछ लोग जो कुछ खा पी कर नहीं आते, घरों से जल्दी आ जाते हैं या सुबह खाने की आदत नहीं होती और फिर यहाँ आ कई बार भोजन के समय में देर हो जाती है तो लंबी भूख की वजह से उनकी तबीयत ख़राब होना शुरू हो जाती है। कुछ मरीज़ होते हैं जो लम्बे समय तक भूखा नहीं रह सकते हैं। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है, तो खाना खाना की मर्की में किसी न किसी चीज़ का प्रबन्ध होना चाहिए और वहां ड्योटी पर लोग उपस्थित होने चाहिए। लेकिन अगर यह मामला है, तो मेहमान भी तुरंत खा कर वापस आएं और जलसा की कारवाई को सुनें।

इसी तरह, प्रशासन इस बात को भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बाज़ार पूरी तरह से बंद हो गया है। किसी स्टाल या दुकान में स्टाल वाला या दुकान वाला भी मौजूद न हो। सब जलसा सुनें। सबसे पहले तो सुरक्षा का प्रबंध वहां होना चाहिए और बाज़ार के विभाग के लिए सुरक्षा प्रबंधन का जिम्मेदार होना चाहिए। लेकिन अगर फिर भी कुछ की तसल्ली नहीं है, अगर कोई बहुमूल्य सामान है, तो दुकान पर नहीं बैठना। वहां बाज़ार में एक कोने में एक जगह बनाएं जहां जलसा सुनने का प्रबन्ध हो और टीवी लगा हो।

इसी तरह यह बात भी कहना चाहता हूं कि जमाअत की तरफ से हर साल की तरह इस साल भी प्रदर्शनियां लगाई गई हैं जिनमें रिव्यू आफ रिलेजनज़ का प्रदर्शन भी होगा और साथ ही कफन मसीह प्रदर्शन भी होगा। अन्य ग़ैर-मुस्लिम विशेषज्ञ भी आ रहे हैं जो उनके व्याख्यान भी देंगे और सवालों के जवाब देंगे। इन में भी जो लोग रुचि रखते हैं उन्हें लाभ उठाना चाहिए।

इसी तरह "अलकलम' का प्रोजेक्ट भी रिव्यू आफ रिलेजनज़ के अधीन इस बार भी चलेगा जहां कुरआन की कोई न कोई आयत हाथ से लिखने का मौका दिया जाता है। इसमें लोग बहुत रुचि से शामिल होते हैं, तो जिन लोगों को कुछ रुचि है उन को लाभ उठाना चाहिए।

इसी प्रकार, आर्काईव विभाग के अधीन भी कुछ तबर्रुकों के प्रदर्शन का आयोजन किया गया है। वह भी देखने वाली चीज़ होगी। मख़ज़न तसावीर की तस्वीरों का प्रदर्शन है। लेकिन यह याद रखें कि यह जलसा की कार्यवाही के दौरान ये सब बन्द रहेंगी। जलसा की कार्यवाही को सब ध्यान से सुनें और भाषणों का लाभ उठाएं। उल्मा अल्लाह तआला की कृपा से कड़ी मेहनत से अपनी तकरीर तय्यार करते हैं, उन से भरपूर फायदा उठाना चाहिए। यह नहीं कि केवल अपनी पसंद के वक्ताओं या शीर्षकों को ध्यान से सुनें और उसमें रुचि लें और बाकी पर ध्यान न दें।

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं। "सभी ध्यान पूर्वक सुनें। मैं अपनी जमाअत और स्वयं अपनी हस्ती और अपने स्वयं के लिए यही चाहता और पसंद हूँ कि ज़ाहरी कथ्नी जो व्याख्यानों में होती है उसे ही पसंद नहीं किया जाए और सारा उद्देश्य और भरसक प्रयत्न आकर उस पर ही न ठहर जाए कि बोलने वाला कैसी जादू भरी तकरीर कर रहा है? शब्दों में कैसा ज़ोर है? मैं इस बात पर सहमत नहीं हूँ।" फरमाते हैं " मैं तो यही पसंद करता हूँ और न बनावट और दिखावे से " (बनावट और दिखावा कोई नहीं) " बल्कि मेरी तबीयत और प्रकृति ही यही चाहती है कि जो काम हो अल्लाह तआला के लिए हो। जो बात हो ख़ुदा के लिए हो।"

फिर आप फरमाते हैं "हम जो कुछ कहें ख़ुदा तआला के लिए, उस की प्रसन्नता पाने के लिए, और जो कुछ सुनने ख़ुदा की बातें समझ कर सुनें और साथ ही पालन करने के लिए सुनें और मज्लिस नसीहत से हम केवल इतना ही हिस्सा न लें हैं कि यह कहें (कि) आज यह बहुत अच्छी नसीहत हुई।" सुनें ध्यान से सुनें और इस निय्यत से सुनें के पालन करना है केवल इस निय्यतसेन सुनें के नसीहत की प्रशंसा करनी है फिर आप फरमाते हैं कि "मुसलमानों के पतन और गिरने का एक बड़ा कारण है।"(क्यों गिरावट पैदा हुई दूसरे मुसलमानों में? इसका भारी कारण यही है कि वे इस इरादे से नहीं सुनते थे।) फरमाया " अन्यथा इतने जलसे और यूनियनों और मज्लिसें होती हैं और वहाँ बड़ी बड़ी तकरीर करने वाले और व्याख्याता अपने व्याख्यान पढ़ते और भाषण देते, शायर क़ौम की स्थिति पर मातम करते हैं। वह बात क्या है कि इसका कोई प्रभाव नहीं होता।" फरमाया कि "क़ौम दिन प्रति दिन तरक्की के स्थान पर पतन की तरफ की जा रही है।" (यही हम देखते चले आ रहे हैं और आजकल तो और भी अधिक भयानक परिस्थितियां होती चली जा रही हैं।) फरमाया कि "बात यही है कि इन मज्लिसों में आने जाने वाले श्रद्धा लेकर नहीं जाते।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1 , पृष्ठ 398 से 401, संस्करण 1985 मुद्रित यू .के)

अत: इस बुनियादी बात को हर शामिल होने वाले को समझना चाहिए कि ईमानदारी के साथ जलसा के कार्यक्रम में शामिल हों। तकरीरों को सुनें और इस इरादे से सुनें कि हमें उनका पालन करने के लिए कड़ी मेहनत करनी है। अहमदी उलेमा पर अल्लाह तआला का यह बड़ा फज़ल है कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान से लाभ उठाते हैं। अल्लाह तआला और उसके रसूल की बातें इस से लाभ उठाते हुए हम तक पहुंचाते हैं। आध्यात्मिक और ज्ञान वर्धक विषय वर्णन करतें हैं। यदि हम वास्तव में इससे लाभ उठाने वाले हों, तो अपने जीवन में एक इंकलाब पैदा कर सकते हैं। अल्लाह तआला जलसा में समस्त शामिल होने वालों के उद्देश्यों को पूरा करने की शक्ति प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

लिया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से इन बच्चों के चेहरों पर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अंगूठी लगाई। कितने ही ख़ुश नसीब थे यह बच्चे जो ऐसी अनश्वर बरकत ले गए जो किस्मत वालों को ही नसीब होती है। इन बच्चों के पीछे एक बच्ची बैठी हुई थी। हुज़ूर अनवर ने करूणा से उससे पूछा कहा कि तुम्हारी आमीन हुई। कुरआन दैनिक पढ़ती हो? बच्ची ने जवाब दिया कि मैं दैनिक कुरआन पढ़ती हूं।

एक बच्चे ने अपना हाथ हुज़ूर अनवर को दिखाया कि उसे फलबहरी की तकलीफ है। इस पर बच्चे के पिता ने उसकी बीमारी का थोड़ा विवरण बताया और बताया कि अब डॉक्टर वकार बसरा साहिब से होम्योपैथिक इलाज जारी है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला कृपा करे।

एक युवक ने निवेदन किया कि मेरी माँ थाईलैंड में हैं। दुआ करें कि उन का केस पास हो जाए। उन्होंने हुज़ूर को सलाम भेजा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा व अलैकुम अस्सलाम। अल्लाह तआला कृपा करे।

एक युवक ने निवेदन किया कि मेरी बेटी ने परीक्षा देनी है। उसकी सफलता के लिए दुआ करें। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला कृपा करे।

एक युवक ने निवेदन किया कि मैं पाकिस्तान से आया हूं और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर कर रहा हूं। सफलता के लिए दुआ का अनुरोध करता हूँ। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला कृपा करे।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

17 अप्रैल 2017 (दिन सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे पधारे लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। कार्यक्रम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे और परिवारों से मुलाक़ात शुरू हुई।

फैमली मुलाकात

आज सुबह इस सत्र में 49 परिवारों के 181 लोग अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाले यह परिवार जर्मनी की 38 विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। प्रत्येक परिवार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम एक बज कर चालीस मिनट तक जारी रहा। बाद में आदरणीय आबिद वहीद ख़ान इन्चार्ज प्रेस एंड मीडिया दफ्तर लंदन ने हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया। बाद में दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

मुबल्लिग़ों की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

आज कार्यक्रम के अनुसार जर्मनी में सेवा करने वाले मुबल्लिग़ों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ एक मुलाक़ात थी। इस मुलाक़ात में जामिया कनाडा वर्ष 2016 ई में स्नातक होने वाले आठ मुरब्बी भी शामिल थे। यह मुरब्बी जो अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के आधीन लंदन में हैं। जर्मनी के इस सफर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के काफिला में शामिल हैं। प्रोग्राम के अनुसार छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल मीटिंग के लिए तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब जर्मनी से जमाअतों, मस्जिदों और केंद्रों की संख्या और मुबल्लिग़ों की संख्या के विषय में पूछा। इस पर मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब ने बताया कि जमाअतों की कुल संख्या 258 है और मस्जिदों की संख्या 51 और नमाज़ केंद्रों की संख्या 80 के क़रीब है। इस समय 52 मुबल्लिग़ जर्मनी में सेवा कर रहे हैं, जिनमें 33 मुबल्लिग़ मैदान में हैं। 15 मुबल्लिग़ जामिया अहमदिया जर्मनी में बतौर शिक्षक सेवा कर रहे हैं, जबकि चार मुबल्लिग़ जमाअत के दफ्तरों में सेवा पर तैनात हैं।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मैदान में काम करने वाले 33 मुबल्लिग़ों से बारी बारी उनके सुपुर्द जमाअतों और क्षेत्रों की संख्या के विषय में पूछा। तथा हुज़ूर अनवर ने विस्तार के साथ प्रत्येक से पूछा कि आप जुम्अ: की नमाज़ कहां कहां पढ़ाते हैं। हर जमाअत, क्षेत्र की बारी कितनी देर बाद आती है। अपने केंद्र में वर्ष में कितने जुम्अ: पढ़ाते हैं। किन जमाअतों और हलकों की तजनीद (संख्या) अधिक है और किन में कम है। प्रत्येक के ज़िम्म इलाका, क्षेत्र में कितनी मस्जिदें हैं और कितने सेंटर हैं और जहां मस्जिद या नमाज़ सेंटर नहीं हैं वहाँ जुम्अ: का क्या प्रबंधन है। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर ने जुम्अ: की हाज़री के बारे भी पूछा कि बड़ी जमाअतों और छोटी जमाअतों में क्या हाज़री होती है। लोग कितनी कितनी दूरियों से आते हैं। प्रत्येक ने अपने ज़िम्मा क्षेत्र के हवाले से अपनी रिपोर्ट पेश की।

एक मुबल्लिग़ सिलसिला ने निवेदन किया कि मेरी ड्यूटी तब्लीग़ विभाग के अधीन है उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया चाहे तब्लीग़ विभाग के आधीन ही हो लेकिन जुम्अ: की नमाज़ पढ़ाया जा सकता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया जिन मुरब्बियों की ड्यूटी दफ्तरों में है चाहे लिखने में है, प्रकाशन में है, एम.टी.ए में है या किसी और दफ्तर है, सब मुरब्बी विभिन्न जमाअतों में जाकर जुम्अ: पढ़ाएंगे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया नियमित आरगनाईज़ करके, योजना करके इन सभी जमाअतों में जुम्अ: पढ़ाने के लिए भिजावाएँ। जमाअतों की संख्या अधिक है और मुबल्लिग़ों की संख्या कम है इसलिए सभी मुबल्लिग़ जहां भी हों जुम्अ: पढ़ाएंगे।

दो मुबल्लिग़ों ने बताया कि उनकी तब्लीग़ विभाग के आधीन हॉटलाइन पर ड्यूटी है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया जुम्अ: के दिन उस समय क्या सवाल आते हैं। इस पर निवेदन किया गया कि लोग अधिकतर जुम्अ: के समय के बारे पूछते हैं।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया मुरब्बी जुम्अ: का समय बताने के लिए नहीं हैं। आप दोनों भी जमाअतों में जाकर जुम्अ: पढ़ाएं। कोई यहाँ नहीं बैठेगा। हुज़ूर अनवर ने फरमाया घाना में यह हाट लाइन प्रणाली स्थापित है। जामिया घाना के वरिष्ठ वर्ग के छात्र लोगों के प्रश्नों के उत्तर देते हैं। लोगों से संपर्क करके अधिक कार्यवाही करते हैं। उनके सवाल और जवाब और संपर्कों के परिणाम में वहाँ बैअतें भी हुई हैं। तो यहाँ भी जुम्अ: के दिन काम के लिए जामिया जर्मनी के वरिष्ठ छात्रों को भिजवाया जा सकता है। उनकी ड्यूटी लगाई जा सकती है। बहरहाल जो मुबल्लिग़ हैं वे जुम्अ: पढ़ाएंगे।

एक मुबल्लिग़ सिलसिला ने निवेदन किया कि उनकी ड्यूटी एम.टी.ए में है। उस पर हुज़ूर अनवर ने कहा जुम्अ: दिन जाएं और किसी जमाअत में जुम्अ: पढ़ाएं।

एक मुबल्लिग़ सिलसिला ने निवेदन किया कि मेरी ड्यूटी समी बसरी विभाग में कार्यक्रमों की जाँच है और मैं जुम्अ: की नमाज़ मस्जिद नूर में पढ़ा हूँ उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया ठीक है।

दो मुरब्बियों ने निवेदन किया कि वह जमाअत कार्यक्रम के आधीन विश्वविद्यालय में दाखिला ले कर और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और जिस जमाअत में रहते हैं वहाँ अन्य जमाअत जिम्मेदारियां भी निभाते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया ठीक है।

मुबल्लिग़ सिलसिला मुहम्मद अशरफ ज़िया साहिब जो यहाँ बैयतुस्सबूह केंद्र काम कर रहे हैं और उनके ज़िम्म बुल्गारिया के हवाले से निगरानी और साहित्य की तैयारी और 100 मस्जिदों के निर्माण के संदर्भ में कुछ काम सौंपे गए हैं, उन बारे में हुज़ूर अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि उनके यहाँ से फील्ड में भिजवाएं। किसी जमाअत में भिजवाएं और वहाँ उनकी पोस्टिंग करें। जो बुल्गेरियाई भाषा में साहित्य आदि तैयार करना है, जहां भी निर्धारित होंगे वहाँ से कर सकते हैं। बाकी अगर मस्जिदों के निर्माण के आधीन किसी जमाअत में भिजवाना है तो जहां उन की नियुक्त होगी वहाँ से भी भिजवा सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया उन्हें किसी कठिन केंद्र में भेजें जहां लोग विशेष प्रशिक्षण चाहते हैं।

जामिया के उस्तादों के बारे में हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि जामिया में छुट्टियां होती हैं इस दौरान इन उस्तादों से भी काम लिया जा सकता है। उस्तादों का कार्यक्रम प्रिंसिपल साहिब के साथ इस तरह करें कि यह जमाअतों में जाकर जुम्अ: भी पढ़ाएं और साल में जो तीन बार छुट्टियां होती हैं इस दौरान उनसे लाभ उठाएं और उन्हें जमाअतों में प्रशिक्षण के कार्यक्रमों के लिए भिजवाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया जामिया अहमदिया रबवा उस्ताद जमाअतों में जाकर दौरा करते हैं तो यहाँ के जामिया के उस्ताद क्यों नहीं कर सकते।

एक मुबल्लिग़ सिलसिला ने निवेदन किया कि ख़ुद्दामुल अहमदिया में एतमाद

विभाग में काम करता हूँ उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया एतमाद विभाग में ड्यूटी दे रहे हैं तो अपनी मजलिसों में दौरे भी किया करें।

तुलनात्मक धर्म के शिक्षक शोएब उमर ने बताया कि जामिया जर्मनी से वर्ष 2015 ई में स्नातक हुए थे। अब तुलनात्मक धर्म के विषय में विशेषज्ञता कर रहे हैं। प्रिंसिपल साहिब जामिया जर्मनी ने बताया कि रबवा से तुलनात्मक धर्म का पाठ्यक्रम मंगवाया गया है उसके अनुसार यह पढ़ रहे है और विशेषज्ञता रहे हैं। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया यह नियमित अपनी पढ़ाई और कारगुजारी की रिपोर्ट प्रिंसिपल साहिब को दिया करें और प्रिंसिपल साहिब निगरानी भी रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कहा कि जामिया अहमदिया के निकटतम जो जमाअतें हैं और केंद्र हैं आप वहाँ जुम्अ: की नमाज़ पढ़ाने के लिए जामिया अहमदिया के उस्तादों को भी भिजवा सकते हैं। न्यूनतम वर्ष के 26 जुम्अ: तो आराम से पढ़ा सकते हैं। उस्तादों को विश्वविद्यालय की छुट्टियों में भी प्रयोग करें। उनकी ग्रीष्मकालीन की लंबी छुट्टियाँ होती हैं फिर ट्रम के बाद भी दो बार छुट्टियां होती हैं। ऐसे लगभग तीन बार छुट्टियां होती हैं। पंद्रह पंद्रह दिनों में और दो महीने के लिए, इसमें उनसे लाभ उठाएं। उन्हें प्रशिक्षण के कार्यक्रमों के लिए भेजा करें और जो मना कर उसकी मुझे रिपोर्ट करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मेरी जानकारी के अनुसार जब कुछ जमाअत अपने तब्लीग़ी कार्यक्रम बनाती हैं तो लोग ऐन वक्त पर उनके कार्यक्रमों में शामिल होने से इनकार कर दिया है कि हमारे पास समय नहीं है और अमुक जगह पर व्यस्तता है। कई बार तो शुरू में इनकार कर देते हैं कुछ मुरब्बियों के बारे में शिकायत है कि वे हाँ करके फिर ठीक अवसर पर कह देते हैं कि हमें अमुक व्यस्तता हो गई है हम आ नहीं सकते। यह बिल्कुल ग़लत तरीका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ इन्चार्ज मुखातिब होते हुए फरमाया कि जमाअत जो कार्यक्रम बनाती हैं और मुबल्लिग़ों को बुलाती हैं, सदर जमाअत या क्षेत्रीय अमीर या जो भी संबंधित अधिकारी है जिसने कार्यक्रम आरगनाईज़ किया है वह आपको सूचित किया करे कि हम ने यह कार्यक्रम बनाया है। आगे आप का काम है कि आप देखें कि इस कार्यक्रम का पालन हुआ है या नहीं। और अगर मुरब्बी ने किसी कारण शामिल होने से इनकार किया है तो क्या genuine कारण था या आदत से इनकार कर दिया है। आप अपने इन कार्यक्रमों के लिए जामिया के उस्तादों से भी लाभ लें ताकि अधिकतम जमाअत मुरब्बियों से लाभ उठाए। जो आप के मुख्य दफ्तर हैं वहाँ काम करने वाले मुरब्बियों से भी लाभ उठाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: प्रिंसिपल जामिया जर्मनी शमशाद अहमद क़मर साहिब, जामिया अहमदिया रबवा में पढ़ाते रहे हैं और जमाअत के दौरों पर भी जाते रहे हैं तो यहाँ उस्ताद क्यों नहीं जा सकते। जो मुरब्बी दफ्तरों या संस्थानों में काम कर रहे हैं उनसे लाभ उठाएं और जमाअत के कार्यक्रमों में भिजवाया करें। मेरे निकट निकम्मे मुरब्बी वे हैं जो घर में बैठे रहते हैं। बाकी सब समय देते हैं। वक्फ ज़िन्दगी का उद्देश्य ही यह है कि आप चौबीस घंटे समर्पित हैं। सप्ताह के सातों दिन और साल के 365 दिन समर्पित हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: एक यह भी शिकायत है कि कुछ जगह, कई बार माल का भी नुकसान होता है। दौरे पर जा रहे हैं तो योजना करके जाना चाहिए कि कम से कम खर्च में आप कहाँ पहुँच सकते हैं। छोटी कारों का उपयोग करें ताकि कम खर्च हो, पेट्रोल भी कम खर्च होगा। फिर मिशन हाउस के या अन्य लागत हैं उन पर भी हर मुरब्बी को ध्यान रखना चाहिए कि कम से कम खर्च करे और देखे कि जमाअत पर अधिक वित्तीय बोझ न पड़े।

आप ने यह नहीं देखना कि अमुक अधिकारी कितना खर्च करता है या जमाअत कैसे खर्च कर रही है। आप ने यह देखना है कि आप किस हद तक जमाअत के माल को को बचाना है और दूसरों को भी नसीहत करनी है। जब तक ख़ुद खर्च को नियंत्रित नहीं करेंगे दूसरों को नसीहत नहीं कर सकते। कुछ जमाअतें, कुछ अधिकारी, कुछ सदरान और हाकिमों अगर अधिक खर्च कर रहे हैं वहाँ आप का काम है कि उन्हें समझाना और जमाअत के मालों पर नज़र रखना। लेकिन अगर आपका अपना खर्च ख़ुद नियंत्रित नहीं है और आप लोग अधिक डीमानडिंग हैं तो अधिकारी भी आप पर उंगलियां उठाएंगे कि पहले अपने आपको संभालो, हमें क्या नसीहत कर रहे हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसी तरह हर मुरब्बी का काम है कि अन्य मुरब्बी का सम्मान और इज़्ज़त करे। यह भी मुझे रिपोर्ट मिली है कि कई बार आप लोग दफ़्तरों में बैठे दूसरों के विषय में हंसी ठट्ठा औरा उपहास बहुत ज्यादा कर रहे हैं जिसकी वजह से वहाँ बैठे दूसरे क्रमिकों पर बहुत ग़लत प्रभाव पैदा होता है। दफ्तरों में काम करने वाले मुरब्बियों का काम है कि अपने काम से काम रखें। अन्य लोगों को तो खड़े होकर भाषण देते हैं "अनिल लग़्वे मुअरज़ून" लेकिन आप लोग लग़्व में पड़े होते हैं। फ़ज़ूल गपबाज़ी, लोगों की टांगें खीचना। कुछ मुरब्बियों की शिकायत है वह इसमें पीड़ित हैं। बजाय कि एस कि मैं नाम लेकर बताऊं जनरल कह रहा हों, जिन जिन में है वे अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखे। दूसरों की कमज़ोरियों तलाश करने के बजाय अपने आप को देखें और फिर छिपाने की भी आदत डालें। मैं कुछ सप्ताह पहले जो एक विस्तृत ख़ुत्बा भी दिया था उसे ध्यान से सुनो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: यदि आप ने अपना सुधार कर लिया तो नियंत्रण कर लिया तब ही आप जमाअत को सही तरह समझा सकते हैं और तब ही ऐसे उहदेदार जो मुरब्बियों पर आपत्ति करने वाले हैं, ग़लत आपत्ति करने वाले बहुत से हैं उनकी आपत्ति तभी आप अस्वीकार कर सकते हैं या निकाल सकते हैं या उन्हें जवाब दे सकते हैं या उन का सुधार कर सकते हैं या अमीर साहिब को और मिशनरी इन्चार्ज साहिब या प्रशासन को बता सकते हैं या मुझे लिख सकते हैं जब ख़ुद आप हर तरह की मानवीय सीमा तक जितनी सीमा तक सुधार हो सकता है वह हो और सुधार की तरफ ध्यान हो।

कमज़ोरियां, कमियां होती हैं लेकिन जमाअतों को कभी मौका न दें कि जमाअत के उहदेदार आप पर उंगली उठांए। यह न समझें कि व्याख्यान हम देते हैं नसीहतें भी करते हैं कि अल्लाह तआला को जान देनी है। अल्लाह तआला को जवाब देना है तो उसी को सब कुछ समझें। न कोई अधिकारी अपने सामने कोई स्थिति रखता है न अमीर जमाअत न कोई और। आप एक बात को सही समझते हैं वह करें। और जब अपनी बात अपने से बड़े अधिकारी या अमीर जमाअत या मिशनरी इन्चार्ज को पहुँचा देते हैं और मिशनरी इन्चार्ज अपनी शिकायतों और concerns अमीर साहिब तक पहुंचा देते हैं और उस पर वहाँ कोई अनुकरण नहीं हो रहा और बात भी जमाअत के हितों के ख़िलाफ है तो फिर, मैं पहले भी बड़ा खुलकर बयान कर चुका हूँ कि मुझे लिखें कि यह बातें ऐसी हैं जो जमाअत के हितों के ख़िलाफ हो रही हैं और हम ने अमीर साहिब या मिशनरी इन्चार्ज साहिब को लिखा है लेकिन इसके बावजूद इस पर अनुकरण नहीं हो या उसके ख़िलाफ जो कार्रवाई होनी चाहिए थी वह नहीं रही जिस कारण से जमाअतों और जमाअत के व्यक्तियों पर बुरा असर पड़ रहा है ताकि इस की समीक्षा की जाए और देखा जाए कि कैसे इसका उपाय करना है और जब एक बार मुझे लिख दिया तो आप का काम नहीं कि इधर-उधर बैठ कर बातें करें। फिर सही आज्ञाकारिता के साथ अपना काम किए जाएं। जहाँ हम ने कार्रवाई करनी होगी हम ले लेंगे। लेकिन सूचित करना बहरहाल आपका काम है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसी तरह जामिया अहमदिया के उस्तादों ने अधिकतम समय जमाअत के कार्यों के लिए देना है। केवल यह नहीं कि साल में तीन महीने की छुट्टियां मनाते रहें। बाकी अगर कोई काम कर रहे हैं तो ठीक है। अगर अधिक काम किसी को सौंपा नहीं है तो उन लोगों से भी जिस तरह से आप लाभ उठा सकते हैं अधिकतम करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जामिया के संदर्भ में मैं बता दूं कि आप लोग प्रशासनिक आधार से स्वतंत्र हैं। मैं कई बार पहले भी लिख के दे चुका हूँ। मुझे फिर भी कई बार इस प्रभाव मिल जाता है कि कुछ उहदेदार जो हैं जामिया क मामले, में दखल देते हैं या मुरब्बियों के साथ बैठ कर बातें करते हैं या जामिया के उस्तादों से कुछ मुरब्बी ऐसे हैं जो प्रशासन के साथ जा कर बातें करते हैं यह सब ग़लत कर्म हैं। आप लोगों का काम है कि जिस जिस माहौल में जहां जहां काम कर रहे हैं या जिस संस्थान में भी आप को लगाया गया है वहाँ की हर बात आपके पास अमानत है और अमानत सही तरह अदा करना आप का कर्तव्य है।

अगर जामिया के बारे में पढ़ाई के विषय में या छात्र के विषय में या कोई चिंता या अगर कहीं देखें कि किसी भी तरह हस्तक्षेप हो रहा है तो प्रिंसिपल तक पहुंचाएं और उसके बाद मुझ तक पहुंचाएं। जब पहुँचा दें तो आप का काम खत्म। आप ज़िम्मेदारी से आज़ाद हैं। लेकिन अगर नहीं पहुंचाते तो आप लोग दोषी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: इसी तरह बाकी मुरब्बी अगर क्षेत्र में देखें कि उहदेदार हैं, सदर हैं, क्षेत्रीय अमीर हैं या कोई बडो स्तर के अधिकारी हों या केंद्र के उहदेदार हों, कहीं भी कोई बात ख़िलाफ शिक्षा या सिलसिला की रिवायत के ख़िलाफ देखें तो उसे वहाँ रोकने की कोशिश करें और इसे तभी रोका जा सकता है जब आप लोग पहले स्वयं सुधार करने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक और शिकायत अमीर साहिब के हवाले है कि आजकल कई कनटंपरी मुद्दे हैं जिनके संबंध में मुलाक़ातों में जवाब देना पड़ता है। मौउज़: हस्न: अर्थात अच्छे तरीके से, ज्ञान से जवाब देने का आदेश तो है नि:सन्देह वह करें लेकिन मुझे लोग इस विषय में शिकायत करते हैं और यह कहते हैं कि अमीर साहिब कहते हैं कि डपलोमीटकली उत्तर दिया करो। हमारा काम कूटनीति नहीं है।

आप ने कनटंपरी मुद्दों की किसी भी बात का जवाब देना है, जो आजकल बहुत सारे हैं जैसे महिलाओं के हाथ मिलाने के लिए, महिलाओं के हिजाब, होमो सैक्सोईलेटी आदि, इस प्रकार की बातों का धर्म की शिक्षा के अनुसार जवाब देना है। हम ने न किसी प्रेस से डरना है, न किसी सरकार और न किसी दफ्तर की एजेंसियों से डरना है और न ही अख़बारों या किसी भी मीडिया से लेकिन उत्तर ऐसा होना चाहिए जो हिक्मत वाला हो, ज्ञान का जवाब हो लेकिन यह याद रखें कि चापलूसी न हो। कूटनीति हमारा काम नहीं है। लोग इस तरह के सवाल मेरे से भी पूछते हैं। मैं जवाब देता हूँ। डरने की ज़रूरत नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहली बुनियादी बात तो यह है कि मैं कई बार कह चुका हूं कि धर्म समाज के सुधार के लिए आता है। लोगों के सुधार के लिए आता है। धर्म लोगों के पीछे चलने के लिए नहीं आता। आजकल स्वतंत्रता के नाम पर जो नए नए नियम बन रहे हैं उनमें कमी हो सकती है वे ग़लत हो सकते हैं। लेकिन जो अल्लाह तआला की बातें हैं वे ग़लत नहीं हो सकतीं। जो धर्म ने हमें बताया वह ग़लत नहीं हो सकता। इसलिए आप की पहली प्राथमिकता बहरहाल धर्म है और इस को आधार बनाते हुए ज्ञान से आपने जवाब देना है। युवा मुरब्बी कई बार प्रभावित हो जाते हैं। इसलिए मुरब्बी हमेशा यह याद रखें कि विरोध से डरने की ज़रूरत नहीं है। विरोध होगा तो प्रचार भी होगा। उन लोगों का सुधार हम ने करना है। हम ने उन्हें अपने पीछे चलाना है। ख़ुद दुनिया के पीछे नहीं चलना।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: युवा मुरब्बियों को मैं विशेष रूप से कहना चाहता हूं कि आप लोगों ने डरना नहीं और आप ने बिना डरे सारे मुद्दे हिक्मत, कुरआन की शिक्षा के अनुसार, इस्लामी शिक्षा के अनुसार टेकल करने हैं। जहां देखें झगड़ा है वहाँ कह दें क्योंकि तुम्हारा झगड़ा करने का इरादा है इसलिए हम तुम्हारे इन मामलों का जवाब नहीं देते। लेकिन एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में, एक मिशनरी स्थिति से हम ने बहरहाल इस शिक्षा का पालन करना है जो हमें हमारे धर्म ने दी है। इसलिए यह जो बारीक रेखा है कूटनीति और हिक्मत की उसे मद्देनज़र रखें। कूटनीति यह है कि झूठ भी बोल दो। डपलोमीटस जितने भी होते हैं जब अम्बेसियों या अन्य दफ्तर की कामों के लिए जाते हैं तो उन्हें यह ट्रेनिंग दी जाती है कि जहां ज़रूरत हो झूठ बोल दो। मौलाना मौदूदी साहिब की तरह यह नहीं कहना कि जहां ज़रूरत हो वहाँ झूठ बोलने में कोई हर्ज नहीं। आपने हर जगह सत्य और बुद्धि से काम लेना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसी तरह मैंने ख़ुत्बा में भी कहा था कि मिशनरी इन्चार्ज साहिब और अमीर साहिब का काम है कि मुरब्बियों का सम्मान हर जगह होनी चाहिए। इसे स्थापित करवाना आप लोगों का काम है। जमाअतों में यह प्रशिक्षण होना चाहिए कि जहां जहां जमाअतों में मुरब्बी हैं चाहे वह नए पास हुए हैं, छोटी उम्र के भी हैं उनका सम्मान करें। मुरब्बी मुरब्बी है भले ही कि उसकी उम्र क्या है और मुरब्बी जब तक सम्मान स्थापित नहीं होगा वह प्रशिक्षण नहीं कर सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जब आप पहले अपना प्रशिक्षण करेंगे तो तभी तब्लीग़ के मैदान खुलेंगे। अल्लाह तआला ने छिपाया हुआ है कि लोगों को हमारी तरफ से बहुत कम नज़र आता है कि हम बड़े अच्छे आचरण वाले हैं। हमारे काम बड़े अच्छे हैं। आरगनाईज़ड लोग हैं और एक प्रणाली है लेकिन इसके बावजूद हमारे अंदर कमज़ोरियां हैं। उन पर हमें नज़र रखनी चाहिए। यह फिलहाल तो बड़ी अच्छी बात है कि अगर कहीं मतभेद हैं या लोग मुरब्बी का सम्मान नहीं कर रहे तो लोगों तक प्रकट नहीं होता। लेकिन किसी भी समय हो भी सकता है तो फिर पूरा प्रभाव जो आप ने स्थापित किया हुआ है वह बर्बाद हो जाएगा। इसलिए अमीर साहिब का भी और मुबल्लिग़ इन्चार्ज का भी यह काम है कि जमाअतों में और विशेष रूप से अधिकारियों का प्रशिक्षण करके मुरब्बियों का सम्मान स्थापित करवाएं। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा कि ख़ुद मुरब्बियों का भी काम है कि अपना एक नमूना स्थापित करें कि दूसरों की हिम्मत न हो कि कोई ग़लत बात के लिए आप को ज़िम्मेदार ठहराया या आप तू तकार करके संबोधित करें। मैंने देखा है कि कुछ लोग मुरब्बियों का असाधारण सम्मान करते हैं और कुछ ऐसे हैं कि मुरब्बी का नाम भी इस तरह लेते हैं जैसे किसी छोटे बच्चे का भी नहीं लिया जाता। इस बात पर विशेष रूप से नज़र रखें और जमाअतों के उहदेदारों का भी प्रशिक्षण करें और जो अधिकारी सहयोग न करने वाले हैं उनकी रिपोर्ट होनी चाहिए। आप ख़ुद अपने मुरब्बियों का सम्मान स्थापित नहीं करवाएंगे तो अधिकारी कैसे करेंगे। इस विषय में भी अपनी रिपोर्ट लिया और अपने मुरब्बियों से पूछा करें कि तुम्हारी जमाअतों का तुम से व्यवहार कैसा है और आप लोग भी बिना डरे हर बात बताया करें चाहे वह केंद्रीय पदाधिकारी हैं, राष्ट्रीय स्तर के अधिकारी हैं या स्थानीय स्तर के अधिकारी हैं। आप ही का काम है और इस विषय में मैंने ख़ुत्बा में वर्णन किया था कि सम्मान स्थापित करवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आज्ञाकारिता मुरब्बी ने करनी है वह तो जहां तक उसने करनी है चाहे इसका कि कोई सम्मान करता है या नहीं करता। अगर कोई इससे बड़ा अधिकारी है या जमाअत का सदर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

है या अमीर है तो उसका आदर करें। लेकिन साथ ही आप भी बार बार मिशनरी इन्चार्ज और अमीर जमाअत के सूचना के, फिर भी कुछ शिकायतें हैं तो मुझे लिखा है। लेकिन सब से पहले जो मैंने पहले कह दिया है, फिर, फिर, फिर कह रहा हूँ कि अपना सुधार पहले करें। अपना दामन साफ होगा तो आपके ऊपर कोई उंगली उठाएगा तो ही उस की पकड़ हो सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: नए मुरब्बियों को तो मैं अक्सर कहता रहता हूँ, मुझे नहीं पता इस पर अनुकरण होता है कि नहीं होता कि अपने आप को तहज्जुद की आदत डालें। अक्सर ऐसा होता है कि जब रातें छोटी होती हैं बड़ी मुश्किल से सुबह भी उठते हैं। बहुत ही छोटी रात हो तो न्यूनतम डेढ़ घंटा सोने को मिल ही जाते हैं। अगर इरादा हो तो इतने में भी नींद पूरी हो जाती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने एक बार वहाब आदम साहिब मरहूम को देखा है कि रात को बारह बजे वह एक लंबी सफर से टूटी हुई सड़कों से दौरा करके आए। वहाँ छोटी सी जगह थी हम इकट्ठे ही ठहरे हुए थे। आने के बाद वह सो गए थे। रात को डेढ़ बजे बाथरूम के लिए उठा तो मैंने देखा वह डेढ़ बजे मस्जिद में नफिल पढ़ रहे थे। आप लोग जब इस तरह करेंगे तो जमाअतों को भी तहरीक पैदा होगी और दुआओं के बिना तो यह काम नहीं हो सकता। इसलिए विशेष रूप से मुरब्बी के लिए बहरहाल नफल आवश्यक हैं और नमाज़ों की नियमित पाबन्दी, जमाअत के साथ नमाज़ों की तरफ ध्यान दें। चाहे कोई मस्जिद में आता है या नहीं आता, जब आप केंद्र खोलेंगे या मस्जिद में आएंगे तो लोगों को पता चलेगा, लोगों को पता होगा तो वह ख़ुद आएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने यू.के में ख़ुत्ब: के बाद कुछ जमाअतों से मीटिंग की कि नमाज़ों की तरफ ध्यान दें तो एक जमाअत के सचिव प्रशिक्षण और सदर साहिब बता रहे थे कि हमारी हाज़री बढ़ गई है। जब मैंने समीक्षा की कि कितनी बढ़ गई है तो कहने लगे कि 33 प्रतिशत हाज़री गई है। 34 प्रतिशत हो गई है। यह तो कोई हाज़री नहीं। सुबह और ईशा पर तो करीब रहने वालों की अच्छी हाज़री होनी चाहिए जो दूर रहने वाले हैं उन्हें तो कोई बहाना मिल जाता है। इन जमाअतों में भी प्रयास करें। यह आदत डालें और प्रशिक्षण का माहौल ऐसा पैदा कि लोग अपने घरों में ही नमाज़ पढ़ें। अगर केंद्र दूर हैं और नहीं आ सकते या काम से लौटे हैं और थकान है और केंद्र आना मुश्किल है तो मुरब्बियों का केवल ख़ुत्बा सुन लेना या ख़ुत्बा देना काम नहीं है। क्षेत्र में जो हैं उनका काम है कि वह फिर निगरानी भी करें कि इन चीजों का पालन हो रहा है कि नहीं और फिर बात वहीं आती है कि निगरानी तभी हो सकती है जब आदमी ख़ुद निगरानी कर रहा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आम लोगों से मिलते समय आपका आचरण अच्छा नमूना होना चाहिए। प्रचार के लिए पब्लिक रिलेशन में वृद्धि करें। आप के परिवेश में राजनीतिज्ञ हैं या पुलिस वाले हैं या अन्य धर्मों के लोग हैं उन सब से आप के संपर्क भी गहरे होने चाहिए। आमतौर कई बार अक्सर जगह कुछ सैक्टरी प्रचार तब्लीग़ शिकवा कर देते हैं कि मुरब्बी हमें पूरी तरह समय नहीं देते तो जहां जहां जमाअत कार्यक्रम बन रहे हों तो आप लोगों का काम है कि पूरा समय दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जामिया के उस्तादों से जो काम लेना है वह जामिया की मध्यस्थता से ही लेना है। प्रिंसिपल साहिब को लिखें और प्रिंसिपल साहिब देखकर उस्तादों को spare करें। छुट्टियां होने से पहले योजना बनाकर भेजें। अगर उस्तादों का छुट्टियों में कोई व्यक्तिगत योजना है जो एक सप्ताह से अधिक का नहीं होगा तो वह प्रिंसिपल साहिब को भेज दें और दूसरी तरफ मिशनरी इन्चार्ज साहिब अपना प्लान तैयार करके भेज दें कि इन इन जमाअतों में हम ने भेजना है तो बताएं कौन से दिन, कितने मुरब्बी और कौन कौन मुयस्सर आ सकते हैं। तो फिर जब प्रिंसिपल साहिब की तरफ से जवाब आएगा तो आप उन्हें asign सकते हैं कि अमुक अमुक जगह चले जाओ। दोनों तरफ से मेहनत की ज़रूरत है। मेहनत और सहयोग से कोई ऐसा मुद्दा नहीं जो हल नहीं हो सकता है। अगर सहयोग हो तो सब कुछ हो सकता है। हाँ अगर लड़ना हो तो सौकनों की तरह लड़ते रहें तो कभी नहीं हो सकता। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने मुरब्बियों को प्रश्न करने की अनुमति दे दी।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया कि कुछ बड़ी उम्र के दोस्तों के ख़िलाफ कोई जमाअत की कार्यवाही होती है तो जहां वह ख़ुद पीछे हटते हैं वहाँ वे अपने बच्चों को भी साथ ले जाते हैं। उन्हें समझाने की कोशिश करने के बावजूद वे समझते नहीं।

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर कोई सदस्य ग़लत काम करता है और उसके ख़िलाफ जमाअत की कार्यवाही इसलिए होती है कि सुधार हो। अगर बजाय सुधार की भावना के इस में विद्रोह अधिक उभरता है तो उसके लिए दुआ कर सकते हैं। उसे समझाते रहें। आप का काम समझाना है। निरन्तर समझाना काम है। न निराश होने की ज़रूरत है और न थकने की। 99 प्रतिशत लोगों का तो सुधार हो जाती है बल्कि इससे भी अधिक। अगर कोई ऐसा एकाध होता है जिस का सुधार नहीं होता तो उसके बच्चों से अगर वे युवा हैं तो संबंध रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैंने यूके में युवा मर्बियों से सीधे निर्देश देकर अनुभव करवा के देखा है जो इसी तरह बिगड़े हुए थे उनके छोटे बच्चों से जब संपर्क किया गया तो धीरे धीरे जब बच्चे करीब आ रहे थे तो माता-पिता की उन्होंने आप ही सुधार ली।

वहाँ कुछ युवा जो हैं उन्हें अधिकारियों से शिकायतें हैं और वे अधिक ख़राब होने वाले लोग हैं। वयस्कों की बात न करो। युवा अधिक ऐसे हैं जिन्हें अपने बड़ों से शिकायतें हैं या अधिकारियों से शिकायत कर रहे हैं जिस के कारण वे पीछे हट जाते हैं। फिर वह धीरे धीरे बहुत दूर चले जाते हैं। जब युवा मुरब्बियों से मैंने कहा कि उन्हें करीब लाओ तो वह उनसे संपर्क करके उन्हें करीब ले आए तो धीरे धीरे ठीक हो गए। बल्कि कनाडा में भी एक ऐसी परिवार था जो बिल्कुल हट गया था। वहां मस्जिद के दौरे के बाद अब मुझे वहां से रिपोर्ट मिली है कि वह लड़का जो बिल्कुल पीछे हट गया था ख़ुद ही फिर मस्जिद आना शुरू हो गया है और सक्रिय हो गया है। सुधार के लिए तो स्थिरता चाहिए और दुआ चाहिए। इसके बाद मामला ख़ुदा पर छोड़ें। आप बचाने का पूरा प्रयत्न करें।

ख़ुत्बा जुम्अ: सुनने के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब को मुखातिब होते हुए फरमाया कि आपके पास मुरब्बियों से और सैक्टरीयान प्रशिक्षण से रिपोर्ट आनी चाहिए कि जुम्अ: समाप्ति के बाद कितने लोग मस्जिदों में बैठ कर ख़ुत्बा लाइव सुनते हैं। जो घरों में जाने वाले वह सुनकर जाया करें या फिर घर जाकर सुनें। लोगों को तहरीक किया करें कि ख़ुत्बा जुम्अ: मस्जिद में सुनें या फिर घर जाकर सुनें। जर्मनी में अल्लाह तआला की कृपा से काफी लोग सुनते हैं। आप का काम है कि प्रतिक्रिया लिया करें और ध्यान दिलाते रहा करें।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया: कुछ ऐसे क्षेत्र में जहां केवल जमाअत अहमदिया की मस्जिद है। कभी कभी ग़ैर अहमदी पूछते हैं कि क्या हम आप की मस्जिद में ऐतकाफ बैठ सकते हैं? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया उनसे कहें कि हमारी मस्जिदें पहले ही इतनी छोटी हैं कि मस्जिद में दो चार की ही क्षमता है कि वह बैठ सकें। दूसरा यह कि हमारे कुछ नियम हैं उनकी आप पाबन्दी करेंगे या नहीं? पहले हम ने प्राथमिकता बहरहाल अपनी जमाअत के लोगों को देनी है। उनसे खुलकर बात कर लें इसके बाद देखेंगे आप अगर इन शर्तों पर आना चाहते हैं तो फिर बताएंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं जब जेल में गया हूं तो वहाँ एक कैदी मेरे साथ था तो वह मुझे कहानियाँ किस्से सुनाने लग गया। मैंने पूछा तुम जेल में क्यों आए। उसने कहा मैंने हत्या की थी। मैंने पूछा कैसे हत्या की थी। वह कहता मैं रमज़ान के महीने में ऐतकाफ में बैठा हुआ था तो हत्या हो गई। मैंने पूछा ऐतकाफ पर कैसे हत्या हो गई वह कहता क्योंकि हमारी दुश्मनियाँ चलती हैं मैं अपनी एक कलाश्निकोव (gun) भी साथ रखी हुई थी। हालांकि मस्जिद में Gun का क्या संबंध? तो कहता कि मेरा दुश्मन बाहर आया तो मैंने सोचा कि यह कहीं मुझ पर हमला न कर दे तो इससे पहले कि वह हमला करे मैंने उसे मार दिया तो ऐसे ऐतकाफ वाले हमें नहीं चाहिए।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया कि जब व्यक्ति जमाअत अपने राज़ share करते हैं कब तक उनके राज़ों को छिपाना चाहिए और कब रिपोर्ट करना ज़रूरी हो जाता है?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यदि तो जो राज़ वह share करते हैं उनके व्यक्तिगत दोष और बुरइयां हैं तब छिपाना चाहिए। अगर वह त्रुटि या बुराई फैल रही है और जमाअत में जा रही है तो उसे समझाएं और फिर जो संबंधित व्यक्ति आप समझते हैं कि सुधार कर सकते हैं उसे बता दें। इस को फैलाना नहीं

है छिपाने का मतलब है कि लोगों में जा कर बातें न करो। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि जमाअत के हित को दाव पर लगा दो। कोई बीमारी निजी बीमारी की हद तक हो तो सुधार करने की कोशिश करें और इसे समझाएं। लोग बीमारियां दूर भी कर देते हैं लेकिन जब वे जमाअत की बीमारी बननी शुरू होती है, राष्ट्रीय रोग बनना शुरू होता है वहाँ आप ने सुधार के लिए पूरी कोशिश करनी है। एक तो माशा अल्लाह पढ़े लिखे आदमी हैं। बुद्धि अल्लाह तआला ने दी है युवा हो तो उसके हिसाब से सोचकर निर्णय करो। अगर बाहर भी किसी को सुधार के लिए बताना है तो हर जगह चर्चा नहीं करनी बुराई फैलाना नहीं है। इसीलिए ज़ना की सज़ा के लिए क्यों इतनी शर्तें हैं? चार गवाह कौन लाएगा? कहां दिखाएगा। इसका मतलब यही होगा कि कोई सड़क पर बैठ कर ज़ना करे तब ही आप उसे व्यभिचार समझेंगे। नहीं तो नहीं समझेंगे। नियम यही बताया कि दुराचार को फैलने से बचाने के लिए तुम ने आगे चर्चा नहीं करनी इसीलिए इसी सीमा तक बचाव है।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया कि कई बार हमार मस्जिदों में ग़ैर अहमदी मुसलमान आते हैं और अनुरोध करते हैं कि उनका इस्लामी निकाह पढ़ा दिया जाए, देश की संस्थाओं के आधीन तो वे निकाह कर चुके होते हैं। केवल बरकत के लिए नियमित इस्लामी तरीके से निकाह और दुआ करवाना चाहते हैं।

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: कोई हर्ज नहीं है। अगर आप से पढ़ाने आते हैं तो ठीक कर दें। आप में से कोई व्यक्ति किसी ग़ैर अहमदी मौलवी से निकाह न पढ़ाने चला जाए। मैं घाना में था तो कई ग़ैर अहमदी मेरे पास आते थे कि हम ने ज़कात देनी है। मैं कहता था कि अपने मौलवियों को जा के ज़कात दो। वे कहते थे कि हमें पता है कि हमारे मौलवियों ने खा पी जानी है। आप लोग सही उपयोग करते हैं इसलिए आप को देनी है और कई लोग देकर जाते थे और हम ले लेते थे और उन्हें रसीद भी दे देते थे कि आप ने इतनी ज़कात दी है। वे ली जा सकती है तो निकाह भी पढ़ा जा सकता है ।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया कि यहाँ अक्सर जगह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बा की सारांश रिपोर्ट के रूप में पढ़कर सुनाया जाता है। इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैंने वहाँ भी यह कहा था और आप लोगों को भी यह निर्देश दिया है कि अगर लोगों में मेरा ख़ुत्बा सुनने की रुचि पैदा करना है तो अपने ख़ुत्बा अधिक लंबे न दें। दस से पंद्रह मिनट का ख़ुत्बा हो और इसमें अपने स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार जो निर्देश देने वाली बातें हैं नसीहत करने वाली बातें हैं वे करें और अगर इससे पहले मेरे ख़ुत्ब: में कोई ऐसी बातें हैं जो उन लोगों के परिवेश और जमाअत की स्थिति अनुसार हैं इन बातों को फिर से कहना चाहिए या याद करवाना है तो उसके ऊपर नोटिस ले कर दिया करें। यह तो मैंने कहा ही नहीं हुआ कि उसी को दोहराया करें। हाँ यह कहा गया है कि इसमें से कुछ बातें explain करने के लिए होती हैं। उन्हें explain कर दिया करें और वहाँ के जो स्थानीय Issue हैं उन्हें आप आठ दस मिनट में वर्णन करें और फिर यह तहरीक किया करें कि तुम ख़ुत्बा जाकर सुनो।

आप लोगों के MTA से ख़ुत्बा से Attached कर दें तो बहुत सारे Issues कम हो सकते हैं। मैंने कब कहा कि आप पकड़ कर कहानी सुना दिया करें और उसे फिर आप लोग इसी तरह पढ़ते हैं जिस तरह वक्फे नौ के बच्चे भाषण कर रहे हैं अत्फालुल अहमदिया की तरह भाषण नहीं करनी। ख़ुत्बा के Points बताया करें।

एक मुरब्बी सिलसिला ने सवाल किया: यदि एक पक्ष आए और कहे कि दूसरे पक्ष ने दुरुपयोग किया है। मुरब्बी की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया आप एक पक्ष आता है जिसने लड़ाई की है तो उसे समझाएं कि तुम हौसला दिखाओ और धैर्य करो और दुआ करो। उस बताओ कि यह मेरा मामला नहीं है, यह सुधार कमेटी का मामला है। या तो तुम अपने सदर जमाअत को बताओ कि सुधार की कमेटी में दोनों को बुलाकर सुधार करें और सुलह सफाई करवा दें। या अमूरे आम्मा का मामला है उन्हें दे दें। आप का काम है प्रशिक्षित करना और तब्लीग़ करना। आप जमाअत की सुधार कमेटी के सदस्य भी हैं। बतौर सुधार कमेटी के सदस्य होने के आप सुधार की तरफ भी ध्यान दे कता है। क्योंकि मुरब्बी को धर्म का ज्ञान अधिक होना चाहिए और होता है और अगर इससे बढ़ कर बात हो चुकी है जो अमूरे आम्मा में जाना है तो वह सदर जमाअत और अमूरे आम्मा को रिपोर्ट करे और अगर क़ज़ा का मामला है तो क़ज़ा में जाएँ। इन पक्षों को आप ने देख कर उसके अनुसार प्रत्येक से मामला करना है।

आपके पास जो भी आता है आप ने उसे समझाना है कि जमाअत की प्रणाली यह कहती है। पहले अपने आप को जमाअत की प्रणाली से well versed करो। आप को पता होना चाहिए कि नियम किया कहते हैं । आप ने नियम पढ़ें नियमों का ज्ञान हो। फिर प्रशिक्षण के मामले में आप की क्या जिम्मेदारियां हैं यह पता होना चाहिए। फिर उसके अनुसार आप ने प्रत्येक से व्यक्तिगत मामले हल करने हैं। सैद्धांतिक अनुमति तो नहीं मिल सकती है। यह तो हर मामले की अलग स्थिति है कि आप ने किस तरह करना है।

एक व्यक्ति ऐसा है किसी से थपड़ खाकर आया है। उसने कहा मेरे पर दूसरे व्यक्ति ने आत्याचार किया है। अब थपड़ मारने वाले को बुला लें और दोनों को समझाएं। तो थपड़ मारने वाला कहता है कि ग़लती हो गई माफी मांग ली। दोनों की सुलह करा दी। गले मिला दिया। चलो समस्या हल हो गई।

एक ने किसी के लम्बे समय से अधिकार दबाया हुआ है। लम्बे समय दिलों में रंजिशें पल रही हैं। लड़ाई झगड़ा हो गया। तू तकार हो गई। गाली गलौच हो गया। यहाँ जिस तरह एक मस्जिद में एक घटना हुई थी। दो पार्टियां बन गई थीं। मैंने उन्हें बेन कर दिया था। तो इस तरह मामला अमूरे आम्मा के पास जाना चाहिए। फिर अगर इससे बढ़ कर पुरानी रंजिशें चल रही हैं और किसी ने किसी पर उपहास कर दिया और उनका मामले क़ज़ा में चल रहे हैं तो उसे समझाएं कि तुम ने ग़लत किया है। तुम्हारा क़ज़ा में मामला चल रहा है। क़ज़ा से निर्णय करवाओ और उसका पालन करो। समस्या यह है कि आप ने जो प्यार, भाईचारा, आपस में जो रहम की शिक्षा है वह उन्हें समझानी और बतानी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में अमीर साहिब जर्मनी ने निवेदन किया कि एक जमाअत में एक मुरब्बी थे और काम अच्छा चल रहा था तो मैंने सोचा कि सब ठीक होगा। फिर संविधान के अनुसार कुछ तबादले हुए और एक नया मुरब्बी जब वहाँ आए तो अचानक मुझे लगा कि कई समस्याएं शुरू से ही वहां पर मौजूद थे। लेकिन अब लोगों ने नए मुरब्बी से संपर्क करना शुरू कर दिया और इन समस्याओं का भी पता चलना शुरू हुआ और समाधान भी होते गए। क्योंकि नए मुरब्बी अधिक open minded थे।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया। कुछ ऐसे युवा मुरब्बी हैं जिनमें लोगों में मिलकर रहने की क्षमता है और लोग उस मुरब्बी से मिलकर अपनी समस्याओं का हल करने भी आते हैं जो open-minded हो और जो लोगों से मिल-जुलकर रहने की कोशिश करे और यही पहले कह चुका हूं कि मुरब्बी को open-minded होना चाहिए और अपने नमूने स्थापित करने चाहिए और जब वे अपना नमूना स्थापित कर लेंगे कि वे लोगों के हमदर्द हैं तो और लोगों को यह पता चलेगा कि मुरब्बी से संपर्क कर सकते हैं लोग आकर मुरब्बी से बात भी करना पसंद करेंगे और अपने नमूने स्थापित करने के बाद लोगों से भी उम्मीद रख सकते हैं कि वह अपना सुधार करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुबल्लिग़ों यह मुलाक़ात लगभग आठ बजे तक जारी रही। बाद में सभी मुबल्लिग़ों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ हाथ मिलाया और ग्रुप तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बैयतुस्सबूह में स्थित जमाअत के किचन के निरीक्षण लिए पधारे। उस समय रात का खाना तय्यार किया हुआ था। तंदूर से रोटी तैयार की गई थी। हुज़ूर अनवर ने रोटी का एक टुकड़ा लिया और भोजन किया और पूछा कहां तैयार किया गया है। इस पर कार्यकर्ताओं ने बताया कि रसोई के अंदर यह तंदूर लगा हुआ है इस में तय्यार किया गया है। हुज़ूर अनवर ने डायनिंग हॉल का भी निरीक्षण कहा जहां दोस्तों खाना खाते हैं। हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए भोज विभाग के दफ्तर में भी पधारे।

आमीन का समारोह

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद मर्दाना हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अजीज ने प्यार से निम्नलिखित 29 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई। प्रिय सबीह अहमद, अलीम अहमद, तंज़ील साख़िर, फैज़ान अहमद हाज़िक महमूद, शायक महमूद, आशाम महमूद, अली राशिद काहलों, अब्दुल समद बसरा, प्रिय फारान ज़का, दानिश मिर्ज़ा वदूद, राय ज़ौरीज़ अरसलान,

प्रिया आबशर महमूद, माहम बसीर मलिक, बरीरह अज़हर, हिबतुस्सबूर मलिक, तमसीलह मरियम, अमाइलह सज्जाद, सलमा काज़ी, हानिया अहमद, मेहर महमूद, हानिया बसरा, सबर यनावर्क, समीन अहमद, शाफिया राणा, रिदा मसूद, हिबह मसूद, ज़ारा आसिफ, सारिया वदूद।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

18 अप्रैल 2017 (दिन मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे पधारे लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक, रिपोर्ट और ख़त देखीं और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने विभिन्न दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। कार्यक्रम के अनुसार निम्नलिखित इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ **से इन्ट्रवियू लेने के लिए आए हुए थे।** SAT 1 TV HR (टी.वी, रेडियो) hr info (रेडियो) faz (अख़बार) dpa (जर्मन प्रेस एजेंसी) das milieu (ब्लॉग) कार्यक्रम के अनुसार सुबह ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और प्रेस सम्मेलन शुरू हुईआ।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि आजकल विशेष रूप से जर्मनी में इस्लाम से डर बढ़ रहा है और लोग आरक्षण के कारण अत्याचार भी करते हैं जैसे मस्जिद में सूअर का सिर काट कर फेंक देना, तो आप इस संदर्भ में क्या प्रतिक्रिया दिखाते हैं?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि इस्लाम यह डर दिनों दिन बढ़ता चला जा रहा है। यह आपका सवाल है। अर्थात इस्लामोफ़ोबिया। यह तो हर जगह है न कि केवल जर्मनी में। यह डर तो पश्चिमी दुनिया या प्रगतिशील दुनिया या ग़ैर मुस्लिम देशों में कुछ हिंसक ग्रुप के इन कार्यों की वजह से हर जगह पाया जाता है जो वह इस्लाम के नाम पर करते हैं। उनका दावा है कि वे मुसलमान हैं और जो वे करते हैं वे इस्लाम की शिक्षा के अनुसार है, जबकि यह बात सही नहीं है। वह तो केवल इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को बिगाड़ कर पेश कर रहे हैं। उन्होंने कुरआन की वास्तविक शिक्षाको नहीं समझा है वे कुरआन की शिक्षा की ग़लत व्याख्या कर रहे हैं और इस की भविष्यवाणी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चौदह सौ साल पहले से थी कि यह होना है। अर्थात मुसलमान इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को भुला देंगे। कुरआन करीम के अपनी वास्तविक स्थिति में बने रहने के बावजूद वह उसके वास्तविक मतलब का पालन नहीं करेंगे। फिर मुसलमानों में इस समय एक सुधारक आएगा जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को फिर से जीवित करेगा और उसकी जमाअत इस्लामी की वास्तविक शिक्षा को फैलाएगी। अत: यह जो हो रहा है यह होना ही था।

हम अहमदियों का विश्वास है कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम वही व्यक्ति हैं जिनकी ख़ुशख़बरी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने दी थी और भविष्यवाणी फरमाई थी कि आने वाला सुधारक चौदहवीं सदी के अंतिम मसीह और महदी के नामों के साथ आएगा और वह सभी मुसलमानों को बल्कि दुनिया के हर इंसान को एक हाथ पर एकत्रित करेगा और उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत करेगा और यही कारण है कि हमारा विश्वास है कि वह व्यक्ति आ गया है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मैं दो उद्देश्यों के लिए आया हूँ। पहला यह कि मानवता को अपने निर्माता के निकट करूं लोग अपने बनाने वाले को पहचानें और दूसरा यह कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अधिकारों को अदा करे और आपस में शांति के साथ दोस्ताना तरीके से रहने की तरफ ध्यान दिलाओं। इसीलिए आपने फ़रमाया कि इस ज़माने में धार्मिक युद्ध समाप्त हो गए और हम देखते हैं कि आज युद्ध तो हो रहे हैं लेकिन कोई भी धर्म, धर्म के रूप में किसी मुस्लिम देश या इस्लाम पर हमला नहीं कर रहा। भू राजनीतिक युद्ध तो हैं मगर अब धार्मिक युद्ध नहीं रहे। जो होना था वह हो रहा है और हम यहाँ जर्मनी में भी और दुनिया के बाकी हिस्सों में भी कोशिश कर रहे हैं कि इस्लाम के विषय में मनुष्य के दिमाग़ों से ग़लत फहमी को दूर करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं। मुझे तो पता था कि यह होना चाहिए और मुझे यह भी पता है कि हमें बड़ी मेहनत करके ग़ैर मुस्लिम लोगों के मन से इस्लाम के विषय में सभी संदेह को दूर करना होगा। इस्लाम चरमपंथ का धर्म नहीं है। इस्लाम तो शांति प्यार और सद्भाव का धर्म है और यही वह वास्तविक संदेश है जिसे हम दुनिया भर में फैलाते हैं और उम्मीद करता हूं कि जब लोगों को इस संदेश के माध्यम से जो हम फैला रहे है इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का ज्ञान होगा तो लोगों के मन से इस्लामोफोबिया समाप्त हो जाएगा। हम देखेंगे कि एक दिन लोगों को ज्ञान होगा कि इस्लामी चरमपंथ या क्रूरता का धर्म नहीं है बल्कि इस्लाम तो शांति, प्रेम और सद्भाव का धर्म है।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि किस चीज़ की ज़रूरत है और राजनीति को क्या करना चाहिए ताकि यह संबंध बेहतर हो जैसे क्या इस बात की ज़रूरत है कि स्कूलों में इस्लाम की शिक्षा पढ़ाई जाए या मस्जिदें अधिक आसानी से निर्माण की जाएं? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि इस्लाम एक धर्म है। आप अपने स्कूलों में ईसाई धर्म की और कुछ स्कूलों में यहूदी धर्म की शिक्षा देते हैं। भारत में हिंदू धर्म और सिख धर्म की शिक्षा दी जाती है। इस्लामी दुनिया में इस्लाम की शिक्षा दी जाती है और यहां पश्चिमी दुनिया में भी इस्लाम धर्म के रूप में स्कूलों में पढ़ाया जाता है। यदि मैं एक ब्रिटिश नेशनल हूँ मगर मैं एक मुसलमान हूँ और और ब्रिटिश नेशनल ईसाई होगा एक अन्य यहूदी होगा। एक और हिंदू होगा या कुछ नास्तिक धर्म भी होते हैं बल्कि कुछ ख़ुदा की सत्ता में ही विश्वास नहीं रखते। लेकिन फिर भी हम सब इस देश के राष्ट्रीय हैं और हम इस देश के निवासी हैं। इस देश के निवासी होने के नाते हमारे अधिकार एक जैसे होने चाहिए और धर्म का इसमें कोई हस्तक्षेप न हो और जिस तरह इस देश के निवासी राजा होने के नाते देश की राजनीति में भाग ले सकता हूँ उसी तरह एक हिंदू या ईसाई या यहूदी इस देश के निवासी होने के नाते राजनीति में सक्रिय रूप से सीधे भी भाग ले सकते हैं। अत: इन मामलों में धर्म को खींचकर डालने की क्या ज़रूरत है? राजनीति और धर्म दो अलग बातें हैं। हमें उनमें अंतर करना चाहिए। हमें राज्य और सरकार और धर्म को अलग रखना चाहिए।

* एक पत्रकार ने निवेदन किया कि स्कूल में इस्लाम की शिक्षा देना अच्छा है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि अच्छा है अगर आप स्कूल में धर्म की शिक्षा दे रहे हैं और छात्रों को धर्म की शिक्षा का शौक है तो आप उन्हें पढ़ाएं। बल्कि अगर प्राथमिक स्कूल में भी आप ईसाइयत पढ़ा रहे हैं तो इस्लाम भी बतौर धर्म पढ़ाना चाहिए लेकिन यह न हो कि इस्लाम कोई संस्कृति करार दें या यह कहें कि इस्लाम राजनीति का एक हिस्सा है। इन छात्रों को जो धर्म में रुचि रखते हैं उन्हें आप इस्लाम पढ़ा कता लेकिन केवल धर्म के रूप में न कि एक पॉलिटिकल विज्ञान के छात्र को इस्लाम एक राजनीतिक वचिारधाराके पढ़ाया जाए। अत: हमें राजनीति और धर्म में अंतर रखना चाहिए और यह बात सुनिश्चित हो कि इस्लाम एक धर्म है न कि कुछ और।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप दुनिया में सफर करते हैं और अपनी जमाअत के लोगों की स्थिति से अवगत होते हैं तो जर्मनी में कैसे हालात हैं?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जहां भी धार्मिक स्वतंत्रता होती खासकर पश्चिमी दुनिया में या प्रगतिशील दुनिया में जहां यह कहा जाए कि धार्मिक स्वतंत्रता है और जो भी तुम्हें पसंद हो तुम उस पर ईमान ला सको और तब्लीग़ भी कर सकते हैं और अनुकरण भी कर सकते हैं जैसे यहाँ जर्मनी में । जहां तक सरकार का संबंध है या देश के संविधान का संबंध है यहां धार्मिक स्वतंत्रता, बोलने की स्वतंत्रता है और तमाम अन्य चीजों की आज़ादी है। अत: दुनिया में जहां भी स्वतंत्रता हो जैसे जर्मनी में भी है तो जमाअत के दोस्त इससे लाभान्वित होते हैं। बेशक विभिन्न स्थानों पर विरोध भी होता है यहां तक कि पूर्वी जर्मनी में राष्ट्रवादी पार्टी के व्यक्ति विरोध भी करते हैं लेकिन हम तो यहाँ ठीक हैं। वैसे तो यह राष्ट्रवादी और राईट जमाअत वाले केवल जर्मनी में ही नहीं बढ़ रहे बल्कि दुनिया के दूसरे भागों में भी बढ़ रहे हैं।

*एक पत्रकार ने निवेदन किया कि इन राष्ट्रवादी जमाअतों के ख़िलाफ कुछ कदम नहीं उठाने चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि हम को उनके ख़िलाफ तो कुछ करने की ज़रूरत नहीं हम तो शांति प्यार और सद्भाव का संदेश फैला रहे हैं। अगर किसी ने उनके ख़िलाफ कुछ करना है तो यह सरकार का कर्तव्य है कि वह इस बात का ध्यान रखे कि इस देश के निवासी होने के नाते हम अहमदियों को वे सभी अधिकार दिए जाएं जो एक ग़ैर मुसलमान को उपलब्ध हैं और वे इससे लाभान्वित हो रहा है। यह तो बस इस्लामोफ़ोबिया या राष्ट्रवाद है और यह सिर्फ मुसलमानों के साथ ही नहीं है बल्कि एक्सट्रीम राईट लोग यह कहते हैं कि हम अपने देश में किसी को भी जो बाहर से आए अपनाना नहीं चाहते चाहे वह मुसलमान है, ईसाई है यहूदी हो, या हिंदू हो या जो भी हो। हालांकि यहूदियों के ख़िलाफ आजकल विरोधी सैमेटिक नियमों की वजह से कोई भी नहीं कह सकता। लेकिन यहाँ जर्मनी

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2019-2017/45- Vol. 2 Thursday 31 Aug 2017 Issue No. 35

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

में भी लोगों में कुछ ऐसी भावनाएं पैदा हो रही हैं और यह अख़बारों में डाकोमनटड हैं। आप भी जानती हैं।

*एक पत्रकार ने निवेदन किया कि आप ख़ुदा में क्यों विश्वास रखते हैं? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि मैं ख़ुदा में इसलिए विश्वास रखता हूं क्योंकि मैंने ख़ुदा को विभिन्न माध्यमों से देखा है। जैसे दुआ की स्वीकृति के द्वारा। मैंने विभिन्न समय पर देखा है कि मैंने ख़ुदा तआला से दुआ की और समय कम था तो मैंने दुआ में यह शर्त रखी कि मैं पंद्रह बीस मिनट में परिणाम देखना चाहता हूँ। और मैंने ख़ुदा से दुआ बड़ी विनम्रता से की और उसने मेरी दुआ स्वीकार की और वह काम हो गया। अत: मुझे एक व्यक्तिगत अनुभव है इसलिए मैं उस पर ईमान रखता हूँ। लेकिन यह मानव स्वभाव है कि किसी ख़ुदा या किसी का निर्माता का होना चाहिए। इसीलिए सब वे बुराईयां जिन पर धर्म पर प्रतिबंध लगाता है उन्हें व्यक्ति पसंद नहीं करता। जैसे आप incest लोगों को नहीं पसंद करेंगे। आप को एक चोर पसन्द नहीं। आप को ऐसा व्यक्ति पसंद नहीं होगा जो दूसरों के अधिकार छीनने वाला हो यही तो धर्म भी कहता है और यही ख़ुदा की शिक्षा है। यह आपके अंदर एक भौतिक प्रकृति है। तो अगर कोई ख़ुदा नहीं तो यह कैसे हो गया। बहुत सारी ऐसे तार्किक बिन्दु हैं जो साबित कर सकते हैं कि ईश्वर है। में ख़ुद भी और एक अच्छी संख्या अहमदियों की भी दुआओं की स्वीकृति के द्वारा ख़ुदा की हस्ती की व्यक्तिगत अनुभव रखती है।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि सौ मस्जिदें बनाने की स्कीम है। आप की भविष्य के विषय में क्या इच्छा है कि जर्मनी में हालात कैसे बनें?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जर्मनी में अहमदियों की संख्या बढ़ रही है इसलिए मस्जिदों की ज़रूरत है, जहां इकट्ठे होकर ख़ुदा की इबादत की जा सके और धार्मिक कर्तव्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम और अन्य ह्यू मीनियटीरियन कार्यक्रम भी आयोजित किए जा सकें। ऐसा नहीं है कि सौ मस्जिदें हमारा अंतिम लक्ष्य है। अति संभव है कि जमाअत बढ़ गई तो सौ से अधिक मस्जिदें बनाएँ जहां जहां हमारी जमाअत स्थापित होंगी वहाँ वहाँ हम मस्जिदें बनाएंगे। मस्जिद एक ऐसी जगह है जो ज़रूरत है। प्रत्येक धार्मिक संगठन को अपनी अपनी इबादत स्थलों की आवश्यकता है। जैसे ईसाई को गिरजे चाहिए। यहूदियों को कलीसा की ज़रूरत है। और दूसरों को मंदिर आदि की ज़रूरत है। अत: इसी तरह हमें मस्जिदों की ज़रूरत है। हमारी मस्जिदों में लोग देख सकते हैं कि वास्तविक इबादत कैसे की जाती है और हम अपने निर्माता के कैसे निकट हो सकते हैं और अपने साथ रहने वालों के अधिकार कैसे निभा सकते हैं।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि आज आप एक मस्जिद का शिलान्यास करने जा रहे हैं आप को क्या लगता है कि इसकी स्वीकृति कैसी होगी? इसपर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि यहां अगर आपके पड़ोसी आप को अनुमति नहीं देते तो मस्जिद नहीं बना सकते। यदि काउंसिल अनुमति देने के लिए तैयार नहीं तो मस्जिद नहीं बना सकते। हमें यह सब अनुमतियाँ पहले मिल चुकी हैं जो हम अब मस्जिद बनाने जा रहे हैं। इस से कम से कम यह पता चलता है कि पड़ोसियों ने हमें स्वीकार कर लिया है। मैं उम्मीद करता हूं कि उनमें से अधिकांश हमें स्वीकार करने के लिए तैयार हैं और हमारे उनसे संबंध अच्छे हैं। क्योंकि हम बहुत ओपन हैं। हम समाज में बहुत इंटीग्रेटेड हैं। हम देश से प्यार पर विश्वास रखते हैं। कोई व्यक्ति जिस देश में रहता है चाहे वह रिफ्यूजी हो या यहाँ का नागरिक है उसका कर्तव्य है कि उस देश से प्यार करे और उसका कर्तव्य है कि देश की भलाई के लिए मेहनत करे। अत: जब हम यह कर्म करेंगे तो हम स्वीकार किए जाएंगे। और लोग हमें पसंद भी करते हैं। कम से कम हमारे पड़ोसी लोगों की बहुमत हमें पसंद करती है।

एक पत्रकार ने सवाल किया कि जब आप उत्तरी कोरिया की तरफ देखते हैं तो खतरों के संदर्भ में आप के क्या विचार हैं? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि न्यूकलेयर वार के जोखिम बहुत हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि कोई ख़तरा नहीं कोई उम्मीद लगाने की ज़रूरत नहीं है कि कुछ भी नहीं होगा। ख़तरा है बल्कि अमेरिका के उपाध्यक्ष दक्षिण कोरिया गया है और अगर वह उधर जाकर कह देता कि हम अपने शत्रुओं को समाप्त करने के लिए तैयार हैं और उत्तर कोरिया तो यह कह रहा है कि इससे पहले कि अमरीका युद्ध शुरू करे हमें परमाणु बम फायर कर देना चाहिए। इससे मालूम होता है कि ख़तरा है। इसके अतिरिक्त ईरान, सीरिया और रूस भी इकट्ठे हो गए हैं और एक ब्लॉक बना लिया है। कुछ दिन पहले तक लोग यह सोच रहे थे कि रूस और अमेरिका के अब संबंध बेहतर हो जाएंगे क्योंकि ट्रम्प तो पुतिन समर्थक है लेकिन अब आप देख सकते हैं कि ऐसा नहीं है। रातों रात सब बदल गया है। पिछले महीने लंदन में एक पीस संगोष्ठी थी जो हम हर साल आरगनाईज़ करते हैं। वहाँ मैंने इस बात का उल्लेख किया था कि यह न समझना कि यह बलाकज़ कभी बनेंगे ही नहीं। जब युद्ध शुरू होती है कई बार ऐसा होता है कि एक ग्रुप एफेली एशन तबदील कर दूसरे ग्रुप में शामिल हो जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध में यही हुआ था। रूस और जर्मनी शुरू में एक ही थे। मगर आख़िर कार क्या हुआ। अगर जंग छिड़ गई तो नए ब्लॉग के उभरने का बहुत बड़ा ख़तरा होगा। और इस बार तो छोटी क़ौमों के पास परमाणु हथियार हैं और इस बार बर्बादी अधिक होगी।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि जो मस्जिद बन रही है इसमें हर धर्म के लोगों का स्वागत किया जाएगा? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि हर धर्म के लोगों को हमारी मस्जिदों में स्वागत है कहा जाता है बल्कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के ज़माने में एक ईसाई प्रतिनिधिमंडल आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मिलने आया कुछ समय के बाद आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को लगा कि प्रतिनिधिमंडल के सदस्य कुछ परेशान लग रहे हैं। तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने पूछा कि आपकी परेशानी का कारण क्या है। उन्होंने कहा कि उनकी इबादत का समय समाप्त हो रहा है। लेकिन इबादत के लिए कोई जगह नहीं मिल रही। तब वे सब मस्जिदे नबवी मदीना में बैठे थे। तो आप ने फ़रमाया कि परेशानी की कोई बात नहीं आप मेरी मस्जिद में अपनी इबादत कर लें। अत: मस्जिदें खुली होती हैं हर व्यक्ति के लिए जो एक ख़ुदा की इबादत करना चाहता है वह आकर कर सकता है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

बेहतीरन वज़ीफा

स्यालकोट ज़िला का एक नम्बरदार था उसने बैअत करने के बाद पूछा कि हज़ूर अपनी मुबारक ज़बान से कोई वज़ीफा बता दें।

फरमाया कि नमाज़ को संवार कर पढ़ो क्योंकि सारी कठिनाइयों की यही कुंजी है और इसी में सारा सुख और ख़ज़ाने भरे हुए हैं। सच्चे दिल से रोज़े रखो। सदका और दान करो। दरूद और इस्तिग़फार पढ़ा करो। अपने रिश्तेदारों से नेक सलूक करो। पड़ोसियों से दयालुता के साथ व्यवहार करो। मानव जाति बल्कि जानवरों पर भी रहम करो। उन पर भी ज़ुल्म न करो। ख़ुदा से हर समय सुरक्षा चाहते रहो क्योंकि अशुद्ध और असफल है वह दिल जो हर समय ख़ुदा की डेवढ़ी पर नहीं गिरता वह वंचित किया जाता है। देखो अगर ख़ुदा ही रक्षा न करे तो मनुष्य का एकदम गुज़ारा नहीं। पृथ्वी के नीचे से लेकर आकाश के ऊपर तक हर क्षेत्र उस के दुश्मनों से भरा हुआ है। यदि उसकी सुरक्षा शामिल नहीं है तो क्या हो सकता है? दुआ करते रहो कि ख़ुदा तआला मार्गदर्शन पर चलने वाला बनाए क्योंकि उसके इरादे दो ही हैं। गुमराह करना और मार्गदर्शन जैसा कि कहता है يضل به كثيرا و يهدى به كثيرا अत: जब उसके इरादे गुमराह करने पर भी हैं तो हर समय दुआ करनी चाहिए कि वह गुमराही से बचाए और हिदायत की तौफ़ीक़ दे। नरम स्वभाव बनो क्योंकि जो नम्रता अपनाता है ख़ुदा भी नरम मामला करता है असल में नेक इंसान तो अपना पांव भी पृथ्वी पर फूंक-फूंक कर ध्यान से रखता है ताकि किसी कीड़े को भी परेशानी न हो। अत: अपने हाथ से, पैरों से, आंख आदि अंगों से किसी भी प्रकार की चोट मत पहुंचाओ, और अपनी दुआएं मांगते रहो।

(मल्फ़ूज़ात, खंड 3, पृष्ठ 106, संस्करण 2003, मुद्रित कादियान)

(नज़ारत इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया कदियान)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad